कौल-कल्पतरु

चण्डी

वर्ष ५९ अङ्क ६

श्रीशारदीय-नवरात्र-अङ्क

पर्व-पत्र

शारदीय नवरात्र, 'विजय'-संवत् २०५७ विक्रमी से शरत् पूर्णिमा तक

(आश्विन शुक्ला प्रतिपदा, वृहस्पतिवार २८ सितम्बर, २००० से)

- **आश्विन शुक्ला प्रतिपदा, वृहस्पतिवार** (२८ **सितम्बर,** २०००) : शारदीय नवरात्र प्रारम्भ। प्रातः-काल सतैल स्नान। ध्वजा-रोहण। **'कलश'-स्थापना। चण्डी-पाठारम्भ।** सप्त-दिवसीय पाठ-कर्त्ता **'सप्तशती'** के **अध्याय १** का पाठ करे।
- **आश्विन शुक्ला द्वितीया, शुक्रवार** (२९ **सितम्बर,** २०००) : **'चण्डी'**-पाठ। सप्त-दिवसीय पाठ में **अध्याय २-३**।
- **आश्विन शुक्ला तृतीया, शनिवार** (३० **सितम्बर,** २०००) : **'चण्डी'**-पाठ। सप्त-दिवसीय पाठ में **अध्याय ४**।
- **आश्विन शुक्ला चतुर्थी, रविवार** (१ **अक्टूबर,** २०००) : श्रीविनायक-गणेश चतुर्थी। **चण्डी**-पाठ। सप्त-दिवसीय पाठ में **अध्याय ५-६-७-८**।
- **आश्विन शुक्ला पञ्चमी, सोमवार** (२ **अक्टूबर,** २०००) : श्रीललिता-व्रत। **'चण्डी'**-पाठ। सप्त-दिवसीय पाठ में **अध्याय ९-१०**।
- **आश्विन शुक्ला षष्ठी, मङ्गलवार** (३ **अक्टूबर,** २०००) : बिल्व-अभिमन्त्रण। **'चण्डी'**-पाठ। सप्त-दिवसीय पाठ में **अध्याय ११**।
- **आश्विन शुक्ला सप्तमी, बुधवार** (४ **अक्टूबर,** २०००) : पत्रिका-प्रवेश। अन्नपूर्णा- परिक्रमा। सप्त-दिवसीय पाठ में **अध्याय १२-१३**।
- **आश्विन शुक्ला अष्टमी, वृहस्पतिवार** (५ **अक्टूबर,** २०००) : महाऽष्टमी-व्रत। 'चण्डी'-पाठ। **बलिदान। महाऽष्टमी का निशा-पूजन।**
- **आश्विन शुक्ला नवमी, शुक्रवार** (६ **अक्टूबर,** २०००) : महाऽष्टमी-व्रत—**पारण, हवन, कुमारी-पूजन** आदि।
- **आश्विन शुक्ला नवमी, शनिवार** (७ **अक्टूबर,** २०००) : अपराह्न-व्यापिनी **विजया-दशमी, शमी-पूजन। नवरात्र-व्रत-पारण।** नील-कण्ठ-दर्शन-ध्यान। **श्रीदुर्गा-विसर्जन।** पूर्णाभिषेक-पर्व।
- **आश्विन शुक्ला दशमी, रविवार** (८ **अक्टूबर,** २०००) : राम-राज्य-पट्टाभिषेक-योग्या विजया-दशमी। भद्रा रात्रि १०.१५ बजे तक।
- **आश्विन शुक्ला एकादशी, सोमवार** (९ **अक्टूबर,** २०००) : भद्रा प्रातः ११.११ बजे तक। **पापांकुशा एकादशी-व्रत।** श्रीभरत-मिलाप।
- **आश्विन शुक्ला द्वादशी, मङ्गलवार** (१० **अक्टूबर,** २०००) : पद्म-नाम-द्वादशी-व्रत। १२-४४ के बाद **त्रयोदशी तिथि** प्रारम्भ—**ऋण-निवारक 'भौम-प्रदोष-व्रत'।**
- **आश्विन शुक्ला त्रयोदशी , बुधवार** (११ **अक्टूबर,** २०००) : रवि-योग।
- **आश्विन शुक्ला चतुर्दशी, वृहस्पतिवार** (१२ **अक्टूबर,** २०००) : शरत् पूर्णिमा। **कोजागरी पूर्णिमा।** रात्रि में **लक्ष्मी-कुबेर-पूजन। चतुर्दशी** दिन २.२३ तक इसके बाद **पूर्णिमा** प्रारम्भ।
- **आश्विन शुक्ला पूर्णिमा, शुक्रवार** (१३ **अक्टूबर,** २०००) : कार्त्तिक-व्रत-स्नान-नियम प्रारम्भ।

* * *

सहयोगी-बन्धुओं एवं पाठकों को चण्डी-परिवार की ओर से शारदीय नवरात्र की हार्दिक शुभकामनाएँ —*ऋतशील शर्मा*

'शारदीय महा-पूजा'—शक्ति-पूजा है। **पुण्य-सञ्चय** का यह **सर्वोत्कृष्ट काल** है। यह **प्रति-वर्ष** आती है। यह प्राणि-मात्र को **जीवन-शक्ति** देनेवाली है। जिस दिन भारतीय इसकी **महत्ता को हृदयङ्गम** करेंगे, **जगन्माता दुर्गा** उसी दिन अपनी अगाध करुणा की वृष्टि करेगी। आज संसार की जैसी अधो-गति, जैसी दुर्दशा, जैसा विपन्न भाव है, उससे परि-त्राण करनेवाली एक-मात्र **परा-शक्ति दुर्गा** है। आपकी **पूजा** से बढ़कर कोई-श्रेष्ठ आचरण नहीं, कोई बड़ा यज्ञ नहीं। यह **काम-कल्पद्रुम** है। यह **भुक्ति-मुक्ति** देनेवाली है।

- **सम्पादक**
  रमादत्त शुक्ल, ऋतशील शर्मा
- **पता :**
  चण्डी-धाम
  अलोपीदेवी मार्ग, प्रयाग-राज
  दूरभाष : (०५३२) ५०२७८३
- वार्षिक अनुदान : रु० १२०
- **प्रकाशक :**
  परा-वाणी आध्यात्मिक शोध-संस्थान,
  प्रयाग-राज-२११००६
  प्रयाग-राज (उ०प्र०) - २११००६
- **अक्षर संयोजन :** ए.एस. लेजर प्वाइन्ट

'कौल-कल्पतरु' चण्डी

भाद्रपद, 'विजय' सं० २०५७ वि०-सितम्बर, २०००
'श्रीशारदीय नवरात्र'-अङ्क

इस अङ्क में

पर्व-पत्र	आवरण पृष्ठ २
भगवती दुर्गा की षोडशोपचार पूजन-विधि	१८६
साधक का संवाद	१८८
श्रीशारदीय नव-रात्र	१९३
शारदीय नवरात्र-रहस्य	१९७
शारदीय महा-पूजा-महोत्सव	२०१
'ऋग्वेद' में शारदीय दुर्गा-पूजा	२०३
शारदीय महोत्सव	२०५
श्रीमद्-देवी-भागवत में शारदीय नवरात्र	२१७
नव-पत्रिका-पूजन	२२१
शारदीय नव-रात्र में कलश-स्थापन	२२३
शारदीय नवरात्र, 'विजय'-सं. २०५७ वि.	आवरण पृष्ठ ३

'सूचना'

☆ **'चण्डी'** वर्ष ५९, का दूसरा विशेषाङ्क **'श्रीगायत्री कल्पतरु'— विशेषाङ्क-योजना के सदस्यों** को अत्यधिक **वर्षा** एवं **जल-भराव** के कारण पूर्व सूचना के अनुसार भेजा न जा सका। अब यह विशेषाङ्क **'चण्डी'** के आगामी अङ्क के साथ अगले माह **रियायती मूल्य की वी०पी०पी०** द्वारा भेजा जाएगा। कृपया ध्यान देंगे तथा विलम्ब हेतु क्षमा करेंगे।

☆ प्रस्तुत अङ्क द्वारा **'चण्डी'** वर्ष ५९, **वार्षिक अनुदान की दूसरी किश्त ५०-०० की वी०पी०पी०** उन सभी सदस्यों को भेजी गई है, जो वार्षिक अनुदान वी०पी०पी० द्वारा देते हैं। इस वी०पी०पी० द्वारा **वर्ष ५९ हेतु १००-०० रु०** जमा हो जाएँगे। अनुदान के शेष २०-०० रु० **तीसरी वी०पी०पी०** द्वारा आगे लिए जाएँगे। —*ऋतशील शर्मा*

भगवती श्रीदुर्गा का षोडशोपचार पूजन

पहले **भगवती श्रीदुर्गा का स्वागत** करे। यथा—**'हे श्रीदुर्गे मातः आगतं सु स्वागतं'**—यह कहकर दोनों हाथों की अँगुलियाँ फैला उन्हें अधो-मुख-कर स्वागत करे। इसके बाद—**'श्रीदुर्गा-देवि इदमासने आस्यताम्'**—यह कहकर **मूर्त्ति** या **चित्र** के सामने **आसन**-रूप में एक पुष्प प्रदान करे।

१ फिर **'पाद्य'** समर्पित करे —**'श्रीनारद-सहितायै श्रीदुर्गायै नमः पादयोः पाद्यं समर्पयामि'**। जल में **कमल-पुष्प, दूर्वा** आदि मिला ले। जल **'अनामा-अंगुष्ठ की मुद्रा'** से प्रदान करे।

२ **अर्घ्य**—**'श्रीनारद-सहितायै श्रीदुर्गायै इदं अर्घ्यं स्वाहा'**—यह पढ़कर **अर्घ्य** समर्पित करे। **अर्घ्य** हेतु जल में दूर्वा, तिल, पुष्प, अक्षत, चन्दन मिलाए **सभी अँगुलियों की मुद्रा** से प्रदान करे।

३ **आचमन— 'श्रीनारद-सहितायै श्रीदुर्गायै नमः इदमाचमनं स्वधा'**—यह पढ़कर कनिष्ठा-रहित चार अंगुलियों की **'आचमन'-मुद्रा** से आचमन कराए।

४ **मधुपर्क— 'श्रीनारद-सहितायै श्रीदुर्गायै इदं मधुपर्कं स्वधा'**—यह पढ़कर **अधो-मुखी अनामा और अंगुष्ठ की मुद्रा** से अर्घ्य प्रदान करे। **पुनः आचमन— 'श्रीनारद-सहितायै श्रीदुर्गायै इदं शुद्धमाचमनीयं समर्पयामि'**—यह पढ़कर पुनः जल लेकर पूर्व-वत् कराए।

५ **स्नान— 'श्रीनारद-सहितायै श्रीदुर्गायै नमः'—** यह पढ़कर **'ज्ञान-मुद्रा** से **गन्धाक्षत** छोड़ कर भगवती को **स्नान-मण्डप** में ले जाने की भावना करे। फिर **'श्रीनारद-शिव-सहितायै श्रीदुर्गायै नमः इदं हरिद्रादि-द्रव्यं तैलं च समर्पयामि'**—ज्ञान-मुद्रा से गन्धाक्षत छोड़कर ये द्रव्य प्रदान करे। तब **'श्रीनारद-शिव-सहितायै श्रीदुर्गायै नमः स्नानं समर्पयामि'**—यह पढ़ **'कनिष्ठा'**-रहित दाहिने हाथ की शेष अँगुलियों की मुष्टि से पवित्र जल से स्नान करावे।

६ **वस्त्र— 'श्रीनारद-शिव-सहितायै श्रीदुर्गायै नमः वस्त्रं समर्पयामि नमः'**—यह मन्त्र पढ़ कर **अँगूठे से छुई हुई अनामा और मध्यमा से** वस्त्र प्रदान करे।

७ **यज्ञोपवीत—'श्रीनारद-शिव-सहितायै श्रीदुर्गायै नमः यज्ञोपवीतं समर्पयामि'**—इस मन्त्र से उक्त **वस्त्र-प्रदान-मुद्रा** से **'यज्ञोपवीत'** प्रदान करे। ८ **आभूषण—'श्रीनारद-शिव-सहितायै श्रीदुर्गायै नमः भूषणानि समर्पयामि'**—इस मन्त्र से **दाहिने अँगूठे और अनामिका के योग से** बनी मुद्रा से **'आभूषण'** प्रदान करे। ९ गन्ध—**'श्रीनारद-शिव-सहितायै श्रीदुर्गायै नमः गन्धं समर्पयामि'**—इस मन्त्र से **कनिष्ठा और अंगुष्ठ की मुद्रा**-द्वारा **कर्पूर-मिश्रित चन्दन** देवता के अङ्ग में प्रदान करे।

१० **अक्षत—'श्रीनारद-शिव-सहितायै श्रीदुर्गायै नमः अक्षतान् समर्पयामि'**—इस मन्त्र से **सब अँगुलियों के संयोग से बनी मुद्रा**-द्वारा **'अक्षत'** प्रदान करे। ११ **पुष्प— 'श्रीनारद-शिव-सहितायै श्रीदुर्गायै नमः पुष्पं समर्पयामि वौषट्'**—इस मन्त्र से **तर्जनी-अंगुष्ठ की मुद्रा** से **'पुष्प'** प्रदान करे।

१२ **धूप—** पहले पवित्र जल से **'फट्'** मन्त्र पढ़कर **'धूप'-पात्र का प्रोक्षण** करे। फिर **'नमः'** मन्त्र पढ़ **गन्ध-पुष्प से** उसका पूजन करे। तब **धूप-पात्र** को अपने सामने रखकर **'रं'**-बीज का उच्चारण कर उस पर अग्नि रखे और अपना **मन्त्र** पढ़कर अथवा **भगवती दुर्गा का स्मरण** कर अग्नि में **दशाङ्ग धूप** छोड़े। इसके बाद हाथ से **घण्टा** बजाए और **दाहिने हाथ**

की तर्जनी और अँगूठे की मुद्रा से **धूप-पात्र** लिए हुए **धूप** प्रदान करे।

ॐ वनस्पति-रसोपेतो, गन्धाढ्यः सुमनोहरः। आघ्रेयः सर्व-देवानां, धूपोऽयं प्रतिगृह्यताम्॥

'साङ्गायै सपरिवारायै श्रीनारद-शिव-सहितायै श्रीदुर्गायै नमः धूपं समर्पयामि'—यह पढ़कर **धूप** प्रदान करे और **धूप-पात्र** भगवती के चित्र के **वाम-भाग** में रख उस पर पवित्र जल छोड़े।

१३ दीप— मन्त्र अथवा **भगवती दुर्गा का स्मरण** करते हुए **बती** रखे। **'फट्'**—मन्त्र से पवित्र जल से **'प्रोक्षण'** करे। **प्रणव** (ॐ) का स्मरण करते हुए उसे जलावे। फिर **'घण्टा'** बजाता हुआ **'नेत्रों'** से लेकर **'पाद'**-पर्यन्त **'दीप'** दिखावे। यथा—

ॐ सु-प्रकाशो महा-दीपः, सर्वतस्तिमिरापहः। स-बाह्याभ्यन्तर-ज्योतिर्दीपोऽयं प्रति-गृह्यताम्॥

'साङ्गायै सपरिवारायै श्रीनारद-शिव-सहितायै श्रीदुर्गायै नमः दीपं समर्पयामि'—यह पढ़कर **'दीप'** प्रदान करे और **दीप-पात्र** को भगवती दुर्गा की मूर्त्ति या चित्र के **दाहिने** रख दे। तब पवित्र जल से उत्सर्ग कर **'मध्यमा-अंगुष्ठ' की 'दीप-मुद्रा'** दिखावे।

१४ **नैवेद्य**— इसके बाद **भगवती दुर्गा की मूर्त्ति** या **चित्र** के **सम्मुख** या **दाहिने** जल से एक **'चतुरस्र का मण्डल'** बनावे। उस पर **'नैवेद्य'-पात्र** रखे। **'फट्'**-मन्त्र पढ़कर **'चक्र-मुद्रा'** से उसकी रक्षा करे। **'ॐ ह्रीं नमः'** कहकर पवित्र जल से उसका **'प्रोक्षण'** करे। अपना **मन्त्र** अथवा **भगवती दुर्गा का स्मरण** कर उसका **'वीक्षण'** करे। अर्थात् उसे निहारे। **दाहिने हाथ के ऊपर बाँया हाथ रखकर 'नैवेद्य'-पात्र को** ढँके और वायु-वीज **'यं'** का सोलह बार **'जप'** करे तथा यह समझे कि वायु ने उसके **दोषों का शोषण** कर डाला है। फिर उसी तरह अग्नि-बीज **'रं'** का सोलह बार **'जप'** करे और यह समझे कि अग्नि ने उसके दोषों को जला डाला है। **अमृत-बीज 'वं'** का सोलह बार जप करे और यह समझे कि **नैवेद्य— 'अमृत'**-वृष्टि से भर गया है। पुनः पवित्र जल से उसका **'प्रोक्षण'** करे। फिर अपने **मन्त्र** से अथवा **भगवती दुर्गा के पवित्र नामों** से आठ बार अभिमन्त्रित करे। **'गन्ध-पुष्प'** से उसका पूजन करे। **बाएँ अँगूठे** से **'नैवेद्य'-पात्र** को स्पर्श कर और दाहिने हाथ में जल लेकर—

ॐ सत्पात्र-सिद्धं सुहविर्विविधानेक-भक्षणाम्। निवेदयामि देवेशि! सानुगायै गृहाण भो॥

'साङ्गायै सपरिवारायै सायुधायै सवाहनायै श्रीनारद-शिव सहितायै श्रीदुर्गायै नमः नैवेद्यं समर्पयामि' —यह पढ़कर भावना से **भगवती दुर्गा के दाहिने हाथ में जल** छोड़कर बाएँ हाथ से **'कमल-मुद्रा** और दाहिने हाथ से **'ग्रास-मुद्रा'** दिखावे।

१५ **पुष्पाञ्जलि— 'पुष्पाञ्जलि'** देकर पुनः **'पवित्र जल'** प्रदान करे—

ॐ समस्त-देव-देवेशि! सर्वावाप्ति-करं परम्। अखण्डानन्द-सम्पूर्णे, गृहाण जलमुत्तमम्॥

'साङ्गायै सपरिवारायै सायुधायै सवाहनायै श्रीनारद-शिव-सहितायै श्रीदुर्गायै नमः जलं समर्पयामि।' यह पढ़ **कर्पूरादि सुवासित जल** स्वर्णादि पवित्र पात्र में प्रदान करे।

१६ **ताम्बूल**—इसके बाद ताम्बूल पर पवित्र जल छिड़क कर भगवती को अर्पित करे। यथा— **एला-लवङ्ग-कर्पूर-नागवल्ली-दलैर्युतम्। पूजा-भागेरितं देवि! ताम्बूलं गृह्यतां नमः॥**

अन्त में **क्षमा-प्रार्थना** करते हुए भावना से **'प्रदक्षिणा'** करे। जिन बन्धुओं की **'दीक्षा'** हुई हो, वे अपने मन्त्र को पढ़कर प्रत्येक **'उपचार'** अर्पित करें।

* * *

साधक का संवाद

५. अर्थ का अनर्थ

बिलासपुर से लौटते समय मैंने निश्चय किया था कि **मैहर** में उतरकर **शारदाजी** के दर्शन अवश्य करूँगा। **शारदाजी की महिमा** मैंने लड़कपन में ही सुनी थी। **आल्हा** के गानेवाले अपने मङ्गलाचरण में **'देवी शारदा'** का पहले नाम लेते हैं। कहा जाता है कि **महोबे के राजा परिमाल** के **प्रमुख सेनापति आल्हा— भगवती शारदा के बड़े भक्त** थे और आज भी लोग समझते हैं कि वे **अमर** हैं और **शारदाजी की पूजा** नित्य बहुत तड़के सबसे पहले कर जाते हैं। यह भी लोगों का कहना है कि जब **शारदाजी की मढ़िया का द्वार** सबेरे आकर पुजारी खोलता है, तब उसे मूर्ति पर फूल-अक्षत चढ़े ही मिलते हैं। इस तरह की उनकी महिमा की अनेक बातें लोगों में प्रचलित हैं और चूँकि वे सब मैं बड़े भक्ति-भाव से सुनता रहा हूँ, अतएव **शारदाजी के दर्शनों की इच्छा** सदैव मन में जाग्रत् रही है, परन्तु कभी उधर जाने का अवसर ही न मिला और जब आज मैं गाड़ी पर सवार हुआ, तब बहुत प्रसन्न हुआ कि इस बार **भगवती शारदाजी के दर्शन** मिल जाएँगे।

मैहर-स्टेशन पर जब मैं उतरा, उस समय **सन्ध्या** हो रही थी। मेरी प्रसन्नता का कोई ठिकाना न था। स्टेशन पर से **शारदाजी की पहाड़ी** और उनके **मन्दिर की पताका** साफ दिखाई दे रही थी। लोगों से पूछने पर मालूम हुआ कि **पहाड़ी** शहर से काफी दूर है, सबेरे ही दर्शन करने के लिए जाना ठीक होगा। उनकी बात मानकर मैं स्टेशन के पास की धर्म-शाला में जाकर ठहर गया। धर्म-शाला में एक मुसलमान सज्जन को ठहरा हुआ देखकर मुझे बड़ा आश्चर्य हुआ। वहाँ के नौकर को इनाम देने का प्रलोभन देकर मैंने आराम के साथ रहने की व्यवस्था कर ली, परन्तु खाने-पीने की कोई व्यवस्था न कर सका।

दूसरे दिन तड़के ही मैंने **भगवती शारदाजी** के दर्शनार्थ जाने की तैयारी की। एक सज्जन और मेरे पास ही ठहरे हुए थे। वे भी मेरे साथ हो गए। परिचय पूछने पर मालूम हुआ कि वे **मिश्र** हैं और दर्शनार्थ यहाँ आए हैं। धर्म-शाला से हम लोग नगर के द्वार पर पहुँचे, परन्तु उस समय तक फाटक खुला नहीं था। कुछ देर तक प्रतीक्षा करने के बाद जब फाटक खुला, तब हम राज-मार्ग से **शारदाजी की पहाड़ी** की ओर चले। मार्ग में एक माली मिल गया, जो वहीं जा रहा था। हम लोग उसी के साथ हो गए। **मैहर** नगर से यों **शारदाजी की पहाड़ी** अति निकट जान पड़ती है, परन्तु है वह वहाँ से काफी दूर। रास्ते में एक पहाड़ी नाला मिला। माली ने सलाह दी कि यही स्नान आदि कर लेना ठीक होगा। फलतः हम दोनों ने उस नाले में स्नान किया। पानी तो स्वच्छ था पर उसकी स्थिति गन्दी थी। स्नान आदि से छुट्टी पाकर आगे बढ़े और कुछ ही देर में **पहाड़ी** के नीचे पहुँच गए। वहाँ एक बावली थी, जिसके अगल-बगल मिठाईवालों की कई दूकानें थीं। दर्शनार्थी यहीं

इनके पास अपना सामान रखकर और इनसे फूल-माला लेकर तथा बावली से जल भरकर **पहाड़ी** पर चढ़ते हैं। हम लोगों ने भी वही किया। **शारदाजी** की कड़ी चढ़ाई की कथाएँ सुनी थीं, परन्तु आज उसका अनुभव भी हो रहा था। मेरी हिम्मत तो छूट चुकी थी, परन्तु साथ के **मिश्रजी** के उत्साहित करने से ज्यों-त्यों करके चढ़ गया। ऊपर पहुँच कर जब नीचे चारों ओर देखा, एक **अद्भुत दृश्य** दिखाई दिया। उसके देखते ही सारी थकावट दूर हो गई। ऐसा ही सुन्दर वह था।

पहाड़ी की चोटी समतल थी और उसी पर **देवी का एक छोटा-सा मण्डप** था। **शारदाजी का दर्शन** किया और वहीं एक ओर बैठकर **चण्डी का पाठ** किया। तब तक वहाँ दर्शनार्थियों की भीड़-सी हो गई थी। **'पाठ'** समाप्त होने पर हम लोग नीचे उतर आए और दूकानदार के पास जाकर जल-पान करने की व्यवस्था करने लगे, परन्तु बावली का पानी पीने की मुझे हिम्मत न हुई, यद्यपि वहाँ सभी लोग उसी का उपयोग कर रहे थे। एक **पण्डितजी** मेरे साथ ही **पाठ** करके नीचे उतरे थे। वहीं के निवासी जान पड़ते थे। उनसे पूछा—क्या आप यहाँ कोई ऐसा स्थान बता सकते हैं, जहाँ अच्छा पानी पीने को मिल सके, साथ ही यह दोपहर भी आराम से कट जाए?

पण्डितजी ने हम लोगों का हालचाल जान चुकने के बाद कहा—अच्छा होगा, आप **स्वामीजी की कुटिया** पर चले जाएँ। वहाँ पानी भी मिल जाएगा, साथ ही **महात्मा का सत्सङ्ग** भी।

'वह **कुटिया** कहाँ है? यहाँ से कितनी दूर होगी?'

'इसी **पहाड़ी के दूसरी ओर पहाड़ के नीचे** ही है। अधिक दूर नहीं है। बहुत ही रमणीक स्थान है। मैं वहीं जा रहा हूँ। चलना चाहें, तो चलें।'

उनके इस प्रस्ताव से मुझे प्रसन्नता हुई और मैं तैयार हो गया। **मिश्रजी** ने कहा—मैं अकेला कहाँ जाऊँगा! मैं भी चलूँगा।

पण्डितजी ने कहा—जरा ठहर जाइए। **महात्माजी** के लिए दूध ले लूँ। मेरा लड़का घर से लेकर आता ही होगा।

मैंने कहा—अगर आप कहें, तो मैं भी कुछ लेता चलूँ।

'यह तो आपकी **श्रद्धा** की बात है पर यहाँ ऐसी कौन-सी चीज है, जो आप उनके लिए ले चलेंगे। यहाँ जो यह सब मिलता है, वह तो वे खाते नहीं।'

यह जानकर मैं चुप हो रहा। सचमुच वहाँ की दूकानों में ऐसी कोई चीज नहीं थी, जो मेरे ही खाने के लायक हो। तब किसी **महात्मा** के लिए वह कैसे उपयुक्त हो सकती थी? कुछ ही देर में **पण्डितजी** का लड़का दूध लेकर आ गया और हम तीनों आदमी वहाँ से चल पड़े। मार्ग में **पण्डितजी** ने **शारदाजी की महिमा** की अनेक बातें कहीं। यह भी कहा कि जब से **महात्माजी** ने यहाँ **बलिदान** बन्द करवा दिया है, तब से इस स्थान में पहले जैसा चमत्कार नहीं रह गया। फिर **महात्माजी** की जो प्रशंसा की तो उसका अन्त ही नहीं आया। यहाँ तक कि हम **महात्माजी के आश्रम** के समीप पहुँच गए। निस्सन्देह वह एक मनोरम स्थान था। हरी-भरी घाटी के एक कगार पर **महात्माजी की सुन्दर-सी कुटिया** के दिखाई देते ही मेरा हृदय आनन्द से नाच उठा। अब तक मैं श्रोता का रूप धारण

किए था। मैंने **पण्डितजी** से कहा—'स्थान तो सचमुच ही दिव्य है।' और यह कहने के साथ ही हम **कुटी** में पहुँच गए। देखा, **दण्डी स्वामी** की एक भव्य मूर्ति एक कुशासन पर विराजमान है। हम तीनों ने यथा विधि अभिवादन किया। **स्वामीजी** ने हम दोनों का परिचय पूछा। इसके बाद **पण्डितजी** से कहा—इन्हें कुएँ पर ले जाओ। ये वहाँ हाथ-पैर धोवें और जल-पान कर स्वस्थ हों।

पण्डितजी डोल-रस्सी लेकर हमें कुएँ पर पहुँचा आए। **कुटी** के पीछे वह कुँआ था। **मिश्रजी** ने झट पानी निकाला और हाथ-मुँह धोकर हम वहीं जल-पान करने को बैठ गए। मेरे झोले में कुछ पकवान था। उसे निकालकर **मिश्रजी** को दिया। **पण्डितजी** ने लेने से इनकार किया। फलतः हम दोनों ने खाकर पानी पिया और उस शीतल स्थान का आनन्द लेने लगे। कुछ देर तक वहीं विश्राम किया। उसके बाद डोल-रस्सी लेकर **कुटी** में गए। **स्वामीजी** अपने आसन पर ही विराजमान थे। उनसे कुछ हटकर एक आसन पर एक दूसरे **साधु** विराजमान थे, जो **जटा-जूटधारी** थे और रङ्ग-ढङ्ग से **नागा साधु** से जान पड़ते थे। हम दोनों ने उन्हें दूर से ही प्रणाम किया और **दण्डी स्वामी** के पास बैठकर बातचीत करने लगे।

मैंने कहा—महाराज, स्थान तो आपने बहुत सुन्दर चुना है, पर यहाँ **भिक्षा** आपको कहाँ मिलती होगी?

'उसकी मुझे उतनी चिन्ता नहीं रहती। **परमात्मा** सबकी चिन्ता करता है। फिर मैं तो अधिकतर दूध ही लेता हूँ। (**पण्डितजी** की ओर देखकर कहा) ये बड़े **भगवद्-भक्त** हैं। मेरे मतलब भर का दूध नित्य ही आकर दे जाते हैं।'

मैंने कहा—हाँ, **पण्डितजी** बताते थे कि आप एक-मात्र दूध ही की भिक्षा करते हैं और सो भी शुद्ध ब्राह्मण के ही यहाँ की गाय का।

'हाँ, मेरा कुछ ऐसा ही नियम है। यहाँ के **राजा** ने बहुतेरा आग्रह किया, पर मैंने उनकी भी भिक्षा नहीं ग्रहण की। **राजा** प्रायः यहाँ आते हैं। उनको **धर्म** से बड़ा अनुराग है।'

मैंने विनम्रता से कहा—परन्तु उन्होंने तो **शारदाजी** पर का **बलिदान** बन्द करवा दिया है। क्या उनका यह कार्य **धर्म का कार्य** माना जायगा?

'और नहीं तो क्या? आपको पता नहीं, धर्म के नाम पर **शारदाजी** के इस पवित्र स्थान में कितना अनाचार होता रहता था। एक-दो नहीं, सैकड़ों बकरों की यहाँ हत्या की जाती थी। **पञ्च-मकारी वामियों** का यह अड्डा बन गया था।'

लेकिन **वाम-मार्ग** तो सुनते हैं, एक **उत्कृष्ट धर्म** है। उसका प्रचार स्वयं **सदाशिव** ने किया है।'

'हाँ **तन्त्रों** में उसका उल्लेख है, परन्तु जिन **पञ्च-मकारों** का **वाम-मार्गियों** ने प्रचार कर रखा है, वे शास्त्रोक्त नहीं हैं।'

'सो कैसे महाराज?' मैंने अति विनम्रता से निवेदन किया।

स्वामीजी ने सुँघनी नाक से लगाते हुए कहा—अच्छा, मैं अभी बताता हूँ।

सुँघनी सूँघ और छींक-छाँककर तथा अँगोछे से नाक साफकर जब **स्वामीजी** स्वस्थ हुए, तब बोले —देखो, **तन्त्र** ने बताया है और साफ-साफ बताया है कि **पञ्च-मकार** क्या हैं? पहले **म-कार** को ये वामी—**मदिरा** कहते हैं, परन्तु **'तन्त्र'** कहता है—

जिह्वया गल - संयोगात्पिबेत्तदमृतं तदा।
योगिभिः पीयते तत्त न मद्यं गौड-पैष्टिकम्।।

अर्थात् जिह्वा को गले से मिलाकर उस

अमृत का पान करो। उसी का पान योगी लोग करते हैं, गुड़ या पिट्ठी से बने मद्य का नहीं। वामी लोग **दूसरे मकार** को **मांस** कहते हैं, परन्तु **कुलार्णव** में लिखा है—

पुण्यापुराण-पशुं हत्वा, ज्ञान-खड्गेन योग-वित्।
परे लयं नयेच्चितं, मांसाशी स निगद्यते।।

अर्थात् पुण्य और पाप-रूपी पशुओं को ज्ञान-रूपी खड्ग से मारकर, जो योगी मन को ब्रह्म में लीन कर देता है, वही मांसाहारी है। वामी लोग **तीसरे मकार** को **मछली** बताते हैं परन्तु **'आगम-सार'** में लिखा है—

गङ्गा - यमुनयोर्मध्ये, मत्स्यौ द्वौ चरतः सदा।
तौ मत्स्यौ भक्षयेद् यस्तु, स भवेन्मत्स्य-साधकः।।

अर्थात् **शरीरस्थ गङ्गा** और **यमुना**—**इडा** और **पिङ्गला**—के मध्य में दो मछलियाँ हैं। इन दो मछलियों का जो भक्षण करता है, वही मत्स्य-साधक है। यहाँ **गङ्गा** और **यमुना** से मतलब **इडा** और **पिङ्गला** नामक नाड़ियों से है। इनके योग से **प्राणायाम** करना ही मछली खाना कहा गया है। **चौथा म-कार** वामियों के यहाँ **अन्न के बने पदार्थ** हैं, परन्तु **'मेरु-तन्त्र'** कहता है—

आत्मनो जायते मोदस्ता मुद्राः परिकीर्तिताः।
ता ज्ञेया धारणा-ध्यान-समाख्यातास्तु मोक्षदाः।।

अर्थात् आत्मा से जो आनन्द उद्भूत होता है, उसी को मुद्रा कहते हैं। वही **ध्यान, धारणा** और **समाधि** के नामों से प्रसिद्ध है। **पाँचवाँ म-कार** वामियों के यहाँ **स्त्री-भोग** है, परन्तु **'विजय-तन्त्र'** में लिखा है—

कुल-कुण्डलिनी-शक्तिः, देहिनो देह-धारिणी।
तथा शिवस्य संयोगे, मैथुनं परिकीर्तितम्।।

अर्थात् देह-धारी की देह में **कुण्डलिनी शक्ति** है। उसका **सहस्रार के शिव के साथ संयोग** करना ही मैथुन है। इन्हीं **पञ्च-मकारों** के सम्बन्ध में यह कहा गया है—

मद्यं मांसं च मीनं च, मुद्रा मैथुनमेव च।
मकार-पञ्चकं प्राहुर्योगिनां मुक्ति-दायकम्।।

और जो वामी लोग मदिरा, मांस, मछली आदि को **पञ्च-मकार** बताकर अपना उल्लू सीधा करते हैं, वह सब अनाचार है।

इस प्रकार अपना वक्तव्य समाप्त कर **स्वामीजी महाराज**— **'हरिः ॐ हरिः ॐ'** कहने लगे और जब वे चुप हुए, तब मेरे पीछे से किसी ने बहुत धीरे से कहा—परन्तु महाराज, आपके इस प्रवचन से तो वामियों के **पञ्च-मकारों का ही महत्त्व** सिद्ध होता है।

मैंने घूमकर देखा। मेरे पीछे बैठे उस **साधु** ने ही यह बात कही थी, जिसे मैंने पहले कुछ दूर पर बैठा हुआ देखा था। मैं **स्वामीजी** की व्याख्या इतनी तन्मयता से बैठा हुआ सुन रहा था कि जान ही न सका कि वह **साधु** कब अपनी जगह से उठकर मेरे पीछे आकर बैठ गया था। उसे प्रश्न करते देखकर मैं कुछ खिसक गया, ताकि उसका **स्वामीजी** से आमने-सामने वार्तालाप हो। **साधु** की बात सुनकर **स्वामीजी** की मुख-मुद्रा में कुछ अन्तर-सा आ गया और उन्होंने उपेक्षा के ढङ्ग से पूछा—सो कैसे?

उस **साधु** ने कहा—**तन्त्र-शास्त्र** में अनेक **आचारों** का वर्णन है, परन्तु जितनी विशदता के साथ **वामाचार** का कथन किया गया है, उतना दूसरे **आचारों** का नहीं किया है। **आगम** के मतानुसार **पञ्च-मकारों का संग्रह** करना साधक के लिए अति आवश्यक है, अतएव **आगमीय योगाचारियों** के लिए **पञ्च-मकारों** का निर्देश उस रूप में किया गया है, जिसका वर्णन अभी आपने किया है। **महाराज,** आप **संन्यासी** हैं। आपको **धर्म के मामले में वाक्-छल**—नहीं, नहीं, क्षमा कीजिएगा —आपको **धर्म का अपलाप** नहीं

करना चाहिए।

उस **साधु** के कथन को सुनकर **स्वामीजी महाराज** तो आग-बबूला हो गए। उन्होंने डपटकर कहा —क्या कहा? **वाक्-छल! धर्म का अपलाप!** मैं **वाक्-छल** करता हूँ?

साधु ने उसी तरह विनम्रता से कहा—**स्वामीजी** क्रोध न करें। अपने उस कथन के लिए क्षमा माँग चुका हूँ, परन्तु तब मैं यह कहूँगा कि आपने **तन्त्रों का अध्ययन** नहीं किया है। आपको ऐसा एक भी **तन्त्र-ग्रन्थ** न मिलेगा, जिसमें **पञ्च-मकारों** की वास्तविक परिभाषा देकर उनके द्वारा **पूजन-विधान** का निरूपण न किया गया हो।

स्वामीजी शान्त नहीं हुए। वे पुनः तीखे स्वर में बोले— **तन्त्रों** में क्या वास्तविक परिभाषा है? जो व्याख्या मैंने बताई है, क्या वह **तन्त्रोक्त** नहीं है?

'है क्यों नहीं, पर वह एक **विशेष वर्ग** के लिए है। **तान्त्रिक साधना** में वास्तविक **पञ्च-मकारों** के उपयोग का ही विधान किया गया है। यही नहीं, **तन्त्रों** में मद्य के भेद बताए गए हैं, किन पशुओं का मांस ग्रहण करना चाहिए, कौन-कौन मछलियाँ विहित हैं, इन सबका ब्योरेवार उल्लेख किया गया है और साधना में इन सबका उपयोग कैसे करना चाहिए, यह सब **तन्त्रों** में विशद रूप से वर्णन किया गया है।

स्वामीजी चिल्लाकर बोले—यह सब किसी मद्यप पिशाच ने **तन्त्रों** में लिख दिया होगा। कहीं एक कोने में ऐसे वचन पड़े होंगे।

'नहीं, **महाराज,** ऐसा नहीं है। **तन्त्रों** के अधिकांश में इन्हीं सब बातों का वर्णन है। एक कोने में यहाँ-वहाँ तो आपकी दी हुई व्याख्या ही मिलेगी।'

अब तो **स्वामीजी** के दिमाग का पारा १०८ से भी ऊपर चढ़ गया, वे डाँटकर बोले—मूर्ख, क्या बक-बक करता है। चुप रह! तू **वामी** है। इसीलिए **शङ्कराचार्य** ने तुम गिरियों-पुरियों को त्याग दिया था। नहीं जानता है कि स्वयं **मैहर-नरेश** मेरी बात को नहीं काटते?

साधु ने भूमि पर सिर रखकर प्रणाम किया और तब उठकर खड़ा हो गया। उसने कहा— **स्वामीजी** मैं जानता हूँ, **मैहर-नरेश** आपकी बात नहीं काटते हैं, परन्तु **धर्म** का जो अपलाप आप करते हैं, उसे तो मैं नहीं सुन सकूँगा।

यह कहकर वह चला गया। **स्वामीजी** बैठे-बैठे गरजते-तड़पते रहे।

हम लोग इस विवाद से मन-ही-मन बहुत दुखी हो रहे थे। उस **साधु** के चले जाने पर मैंने हाथ जोड़कर कहा—मुझे हार्दिक दुःख है कि मेरे कारण यह अनावश्यक विवाद यहाँ छिड़ गया। इसके लिए मैं क्षमा माँगता हूँ।

स्वामीजी कुछ-कुछ शान्त हो रहे थे। उन्होंने कहा—इसमें आपका कोई अपराध नहीं है। व्यर्थ ही बीच में आकर वह कूद पड़ा। वह वामी है। इन वामियों ने **शारदा-पीठ** को अपने दुराचार का अड्डा बना डाला था, परन्तु मेरे यहाँ आ जमने पर इनका रङ्ग उखड़ गया।

मैंने दूसरा प्रसङ्ग उठाकर **स्वामीजी** को शान्त किया। जब वे पूर्ण रूप से शान्त हो गए, तब हम दोनों ने उनका अभिवादन किया और वहाँ से चल पड़े। साथ के **पण्डितजी** वहीं रह गए। जब हम दोनों **शारदाजी की पहाड़ी** के पास पहुँचे, तब सूर्यदेव अस्ताचल की ओर जा रहे थे। **भगवती को प्रणाम** कर हम लौट पड़े और सीधा स्टेशन पर आकर ही ठहरे परन्तु तब तक गाड़ी छूट गई थी।

(क्रमशः)

श्री शारदीय नव-रात्र

❖ श्रीभुवनेश्वर सिंह 'भुवन'

परम्परा से सर्व-साधारण के मन में यह धारणा बद्ध-मूल हो गई है कि **'श्रीशारदीय दुर्गा-पूजा'** का प्रचलन **'त्रेता-युग'** से हुआ है और इसके आदि-प्रवर्तक **भगवान् श्रीरामचन्द्र** हैं। चूँकि इस **'महा-पूजा'** के पूजाङ्ग में हय, हाथी, यान, वाहन, अस्त्र-शस्त्रों की अर्चा का सीमोल्लङ्घन तथा विजय-यात्रादि का विधान भी है, अतः बहुत से लोगों की धारणा है कि **'विजया-दशमी'** क्षत्रियों का त्योहार है।

पुराणों में लिखा हुआ है कि **दानवेन्द्र रावण** की शक्ति अजेय थी। उस पर विजय प्राप्त करके, **जनक-नन्दिनी जानकी** का उद्धार करना, **वीर-बाहु रामचन्द्र** के लिए भी दुःसाध्य था। अतः अपनी मनोरथ-पूर्ति के लिए उन्हें **जगदम्बा की शरण** लेनी पड़ी और **ब्रह्मा** को आचार्य वरण करके उन्होंने **सविधि 'शारदीय नव-रात्र' का अनुष्ठान** कराया। पर, **शरद्-ऋतु— भगवती का शयन-काल** है, उसी भाव से उनकी पूजा-अभ्यर्थना करने से **रामचन्द्र** का अभीप्सित काम्य तत्काल सिद्ध नहीं हो सकता था। उन्हें **जगदम्बा के वर-लाभ** की जरूरत थी, अतः अपनी महत्तम साधना, भक्ति और मन की दृढ़ता से उन्होंने असाध्य साधन किया।

ब्रह्मा ने अपनी कातर प्रार्थना-द्वारा **जगदम्बा** के हृदय को द्रवित किया और उन्हें अकाल में निद्रा त्याग कर, जाग्रत-भाव से, भक्त की **पूजा-बलि** ग्रहण करने के लिए बाध्य होना पड़ा। इसका प्रसाद **भगवान् रामचन्द्र** को वर-रूप में यह मिला कि वे अजेय शक्ति पर भी पराक्रम प्रकट कर सके और **लङ्का-विजय** करके सफल-मनोरथ तथा यशस्वी बने। तब से यह **'शयन-नव-रात्र'** पूर्ण चैतन्य हो गया, **'नित्य'** के साथ-साथ **'काम्य'** भी बन गया।

भगवान् रामचन्द्र को यह गौरव प्राप्त है कि उन्होंने अपने अनुष्ठान की महिमा से प्रति-वर्ष भक्तों के घर **जगदम्बा के पूजा-ग्रहण** की परिपाटी स्थापित कर दी।

ब्रह्मा ने **जगदम्बा का बोधन** करते हुए, उस समय जिस भाव-भरित, उदात्त और प्रशस्त स्तुति-मन्त्र का पाठ किया था, वह **'महा-भागवत पुराण'** में पठनीय है। तब से लेकर आज तक भक्त-समूह, **बिल्व**-वृक्ष के समीप अधिष्ठित होकर, प्रति-वर्ष अकाल में **जगदम्बा** को सप्रेम जगाता है। उसे त्रेता की उस स्मरणीय घटना का स्मरण कराकर, जागने की प्रेरणा देता है और जगाकर **श्री-चरणों** में अपना हार्दिक भक्ति-सम्भार उपस्थित कर अपने को धन्य और कृत-कृत्य बनाता है, सफल-मनोरथ होता है।

पर केवल इतनी-सी बातों को आधार बनाकर यह निष्कर्ष निकालना कि **'शारदीय-पूजा'** का प्रचलन पहले नहीं था और इसके प्रवर्तक **भगवान् रामचन्द्र** हैं, जड़ता की परा-काष्ठा है। विशेषतः इस **'महा-पर्व'** को जाति या सम्प्रदाय-विशेष की वस्तु बतलाना तो सर्वथा निराधार और कपोल-कल्पित है।

इस **'महा-पूजा'** के समय **जगदम्बा** को जगाने के लिए जो **'बोधन-मन्त्र'** पढ़ा जाता है, वह इस बात का प्रतिपादक है कि **ब्रह्मा** ने

अकाल में **जगदम्बा** को जगाया था—

रावणस्य बधार्थाय, रामस्यानुग्रहाय च।
अकाले ब्रह्मणा बोधो, देव्यास्त्वयि कृतः पुरा।
अहमप्याश्विने षष्ठ्यां, सायाह्ने बोधयाम्यतः।।
तस्मादहं त्वां प्रति-बोधयामि, विभूति-राज्य-प्रतिपत्ति-हेतोः।
यथैव रामेण हतो दशास्यस्तथैव शत्रून् विनिपातयामि।।
अशेष - सुख - लाभाय, नाना - विभव - हेतवे।
नेतव्यः श्वो हिते गेहे, सर्व - काम - प्रदो भव।।

कहना व्यर्थ है कि यदि इस **'महा-पूजा'** की पहले से संस्थिति न होती, त्रेता में **भगवान् रामचन्द्र** के द्वारा ही इसका प्रवर्तन हुआ रहता, तो उक्त मन्त्र का स्वरूप कुछ और होता। केवल **'अकाले ब्रह्मणा बोधो'** पर ही जोर नहीं दिया जाता। इसके अलावा इस मन्त्र के अन्तिम अंश से यह स्पष्ट हो रहा है कि **त्रेता से 'शारदीय महा-पूजा' के 'नित्यत्व' पर 'काम्यत्व' का कितना गाढ़ा रङ्ग चढ़ा है और तब से उभय-रूपेण इसकी महिमा किस भाँति चरितार्थ होने लगी है!**

हिन्दू-शास्त्रों में प्राणियों के लिए तीन तरह के कर्म आचरणीय कहे गए हैं— १ **नित्य,** २ **नैमित्तिक** और ३ **काम्य**। इनसे सर्व-साधारण परिचित हैं, अतः इनकी विशेष व्याख्या यहाँ नहीं की जाती। शास्त्रों से सिद्ध है कि इन तीन कर्मों में **'नित्य'** की कभी उपेक्षा नहीं की जा सकती। अगर की जाय, तो प्राणियों को निःश्रेयस की सिद्धि नहीं मिलती, उसका पतन होता है, इहलोक-परलोक बिगड़ता है। **नित्य-कर्म** चिर शाश्वत है, निश्चित समय पर निश्चित फल देनेवाला है, उससे किसी की तात्कालिक इच्छा की पूर्ति नहीं हो सकती। उदाहरण के लिए **'सन्ध्योपासन'** ब्राह्मण का **नित्य अनुष्ठेय कर्म** है।

'नैमित्तिक कर्म' अवसर-विशेष पर ही आचरित होते हैं, पर इनके न करने पर भी अधर्म होता है। **'काम्य'** के लिए ऐसा कोई बन्धन नहीं है। वह पुरुषार्थियों, भोगार्थियों के द्वारा ही आचरित होता है। उसके आचरण से अभीष्ट फल मात्र की तत्काल प्राप्ति होती है, किन्तु उसके अनाचरण से न तो पाप लगता है, न कुछ हानि होती है। इसीलिए **'काम्य-कर्म'** हीन-कोटि का ठहराया गया है। इसमें त्याग, तपस्या, परमार्थ की भावना कम, स्वार्थ की प्रधानता रहती है। **'काम्य-कर्म'** का उपासक अपने **उपास्य की कृपा** चाहता जरूर है, पर उसी पर निर्भर नहीं रहता, दबाव डालता है। सर्व-साधारण, संसार-सुख-भोगेच्छुओं के लिए **'काम्य-कर्म'** अत्यन्त महत्त्व-पूर्ण है, फिर भी यह **'नित्य'** की तरह उदात्त नहीं है, सब इस कर्म का अनुष्ठान कर भी नहीं सकते।

अतः यदि **भगवान् रामचन्द्र** ही इस **'महा-पूजा'** के प्रवर्तक होते—तो यह **पर्व** महत् पदवी की प्राप्ति नहीं कर सकता था; न प्राणि-मात्र, नगर-नगर, घर-घर के लिए करणीय ही कहा जाता; न इसके त्याग से पाप-भाजन, कल्याण-विरहित ही बनना पड़ता, जैसा कि शास्त्रों में स्पष्ट कहा गया है। क्योंकि **भगवान् रामचन्द्र** की **काम्य-विधि** काम्य ही रहती, उसमें **'नित्यता'** नहीं आ सकती और जब **'नित्यता'** ही नहीं आती, तब यह **चिर-शाश्वत, उदात्त, पुण्य-पर्व** ही कहाँ से होता! पर शास्त्र में तो स्पष्ट लिखा है—

अकुर्वाण इमां पूजां, शारदीं मम पुष्कलाम्।
प्रत्यवाया पितॄन् देवान्, पीडयेच्चिर-नारकी।।

अर्थात्—जो मेरी इस अत्यन्त उत्कृष्ट **'शारदीय महा-पूजा'** का आचरण नहीं करता,

वह पापी देवता और पितरों को सन्ताप देता है और चिर-काल तक नरक-यातना का भोग भोगता है।

शारदीयामिमां पूजां, न करिष्यन्ति ये नराः।
ते पति-यन्ति निरये, पापाः पूजापहारकाः।।

अर्थात्—**'शारदीय महा-पूजा'** को न करनेवाले महा-पापी हैं, उन्हें नरक भोगना पड़ता है। 'महा-काल-संहिता' इत्यादि वाक्यों से इस **'महा-पर्व' की नित्यता** स्वतः प्रतिपादित है।

'शारदीय महा-पूजा'— सनातन, अनादि है, इसके स्पष्ट प्रमाण भी शास्त्रों में ही हैं। जिस **'मार्कण्डेय-चण्डी'** का माहात्म्य विश्व-विश्रुत है, घर-घर जिसका प्रचार है, उसी में **'देवासुर-संग्राम'** के बाद देवताओं को अभीप्सित वर और उपदेश देते हुए स्वयं जगदम्बा ने कहा है—

शरत्-काले महा-पूजा, क्रियते या च वार्षिकी।
तस्यां ममैतन्माहात्म्यं, श्रुत्वा भक्ति-समन्वितः।।
सर्व-बाधा-विनिर्मुक्तो, धन-धान्य-सुतान्वितः।
मनुष्यो मत्प्रसादेन भविष्यति न संशयः।।

ध्यान देने की बात है। इस महत् **'देवी-वाक्य'** में वर्ष-वर्ष करणीय इस **'शरत्कालीन महा-पूजा'** का, **देवी-माहात्म्य-श्रवण** का और उससे उपलब्ध होनेवाले अभीप्सित फलों का स्पष्ट सङ्केत है। कोई-कोई टीकाकार **'वार्षिकी'**-शब्द से **चैत्र-मासीय 'वासन्ती नव-रात्र'** का अभिप्रेत होना सिद्ध करते हैं, पर इससे **शरद्-काल की 'महा-पूजा'** की श्रेष्ठता में कुछ बाधा नहीं पहुँचती। इतना जरूर लक्षित होता है कि **वासन्ती** की अपेक्षा **शरद्-काल के 'नव-रात्र'** का महत्त्व उन दिनों भी 'अपेक्षा-कृत' अधिक था और वह उस समय भी **'महा-पूजा'** के रूप में ही प्रतिष्ठित थी।

जिस समय दाक्षायणी **जगन्माता सती** के तिरोभाव से शोक-मग्न **भगवान् शङ्कर** अपने कर्तव्याकर्तव्य को भूल कर घोर तपस्या में संलग्न थे, **देवताओं** का समूह **तारकासुर** के उत्पीड़न से त्राहि-त्राहि कर रहा था, उस समय संसार की पीड़ाओं को हरने के लिए **देवताओं की उपासना** से सन्तुष्ट **जगदम्बा** ने **गौरी**-रूप में नग-राज **हिमालय** के घर जन्म ग्रहण किया था। **हिमालय की भक्ति** को चरितार्थ करने के लिए उसकी प्रार्थना पर **जगन्माता** ने उसे न केवल अपने अलौकिक **विराट् रूप का दर्शन** ही कराया था, बल्कि दिव्य **'गीता'-ज्ञान (भगवती गीता)** का उपदेश भी दिया था। उस **'भगवती गीता'** में प्रसङ्गात् जहाँ जगदम्बा ने अपने अनेक दिव्य स्थानों का वर्णन किया है, वहीं अपने परम प्रीति - प्रद भक्तों के लिए काम-कल्पद्रुम अनेक **पुण्य-पर्वों की चर्चा** भी की है। उनमें भी सर्वाधिक महत्त्व **'नव-रात्र'** को ही दिया गया है—**'नव-रात्र-द्वयं चैव, व्रतं प्रीति-करं मम।'**

कहना व्यर्थ है कि उक्त दोनों घटनाएँ सतयुगी न सही, तो कम-से-कम **रामावतार** से बहुत पहले की हैं। अतः यदि **'शरत्-कालीन नव-रात्र'** का प्रवर्तन या प्रचार त्रेता-युग में ही हुआ होता, तो उसके पहले के प्रमाण-वाक्यों में उसका स्थिति - बोधक उल्लेख कहाँ से मिलता?

'शारदीय महा-पूजा'— शक्ति-पूजा है। **पुण्य-सञ्चय** का यह **सर्वोत्कृष्ट काल** है। **'शाक्त-धर्म'** के मूल में जिस तरह **'अद्वैत-वाद'** है, उसी तरह वह **विश्व-बन्धुत्व, साम्य-वाद** का प्रतीक भी है। कोई भी राष्ट्र सबल, सार्व-भौम विजय का अधिकारी तभी हो सकता है, जब राष्ट्र की सारी जातियाँ एक शृङ्खला में आबद्ध हों। फूट-विरोध, दम्भ-दुराग्रह, मोह-मद-मत्सर के

रहते केवल **'विजय-यात्रा'** की कोई चरितार्थता नहीं हो सकती। जो **'विजया-दशमी'** को जाति-विशेष का वस्तु-त्योहार कहते हैं, वे इस **'महा-पर्व' के निगूढ़-तम रहस्य** को हृदयङ्गम नहीं कर पाते। वे **'यात्रा'** पर, **राम-रावण-संग्राम** पर तो लक्ष्य रखते हैं, पर **'विजया'**—शाक्तों की प्रशस्त **'होलिका'** अणु-अणु, कण-कण को एक स्नेह-सूत्र में आबद्ध करनेवाला **महिमा-मय महोत्सव** है, इस पर ध्यान ही नहीं देते।

देश की दुर्दशा का, उसकी अधो-गति का यही कारण है कि जितने करणीय **सत्कर्म** हैं, उनकी ओर हमारी उपेक्षा ही रही है और **विश्वास-श्रद्धा का ह्रास** हो रहा है। सुधार संहार कर रहा है। जब हमारा मन निष्कलुष था, सच्ची भावना थी, आचरणीय कर्मों के करने की प्रवृत्ति थी, तब हमारा गौरव भी था। हमारे देश का उत्कर्ष और अभिमान भी था। अब केवल थोथी दलीलें, घृणा-जुगुप्सा, अनाचार, हृदय-दौर्बल्य है, तब वैसा ही परिणाम, वैसी ही काल की प्रवृत्ति भी है। **'शक्ति-सञ्चय'**, फिर कहाँ से सम्भव है?

समय बदल रहा है। आवश्यकता इस बात की है कि पुनः इस **'महा-पूजा'** की पूर्व-पद्धति अपनाई जाए, इसे **'राष्ट्र-धर्म' का प्रतीक** बनाया जाए, इसकी **महा-महिमा का प्रचार** किया जाए। तभी **शक्ति का वास्तविक सञ्चरण** होगा, **भेद-भाव** मिटेगा, **ऐक्य** स्थापित होगा, **हृदय-दौर्बल्य** दूर होगा, **विजया— विजय** देगी, **विजय-यात्रा— वास्तविक विजय-यात्रा** बनेगी।

'शारदीय महा-पूजा' प्रति-वर्ष आती है। वह **अनादि** है, वह **अलौकिक** है, वह प्राणि-मात्र को **जीवन-शक्ति देनेवाली** है। जिस दिन भारतीय इसकी महत्ता को हृदयङ्गम करेंगे, विधि-पूर्वक घर-घर **'नव-रात्र-व्रत'** का अनुष्ठान होने लगेगा, **जगन्माता दुर्गा** उसी दिन अपनी अगाध करुणा की वृष्टि करेगी। भारत पुनः पूर्व-उत्कर्ष प्राप्त करेगा। आज संसार की जैसी अधो-गति, जैसी दुर्दशा, जैसा विपन्न भाव है, उससे परि-त्राण करनेवाली एक-मात्र **परा-शक्ति** है। यह अवसर चूकने से **कल्याण का मार्ग** और भी अवरुद्ध होगा। **साम्प्रदायिक भावनाओं** के लिए यहाँ कहीं स्थान नहीं है। इस **'महा-पूजा'** से बढ़ कर कोई श्रेष्ठ आचरण नहीं, कोई बड़ा यज्ञ नहीं, कोई बड़ी तपस्या नहीं, यह **काम-कल्पद्रुम** है। यह **भुक्ति-मुक्ति देनेवाली** है। मन की अनन्त श्रद्धा के साथ इसका विधि-वत् पालन कीजिए और कराइए। फिर इसका प्रभाव देख लीजिए। **'शक्ति-पूजा'** ही भारत को शक्ति-सम्पन्न बना सकती है।

'शारदीय महा-पूजा'

'शारदीय महा-पूजा' प्रति-वर्ष आती है। वह **अनादि** है, वह **अलौकिक** है, वह प्राणि-मात्र को **जीवन-शक्ति देनेवाली** है। जिस दिन भारतीय इसकी महत्ता को हृदयङ्गम करेंगे, विधि-पूर्वक घर-घर **'नव-रात्र-व्रत'** का अनुष्ठान होने लगेगा, **जगन्माता दुर्गा** उसी दिन अपनी अगाध करुणा की वृष्टि करेगी। भारत पुनः पूर्व-उत्कर्ष प्राप्त करेगा। आज संसार की जैसी अधो-गति, जैसी दुर्दशा, जैसा विपन्न भाव है, उससे परि-त्राण करनेवाली एक-मात्र **परा-शक्ति** है। यह अवसर चूकने से **कल्याण का मार्ग** और भी अवरुद्ध होगा।

शारदीय नवरात्र-रहस्य

❖ 'कौलाचार्य' पण्डित नथमल दाधीच

'शारदीय नव-रात्र' का पूजन **'कन्या-भाव'** से सम्पन्न होता है। कुछ मास पूर्व **चैत्र** के **वसन्तोत्सव** में **भगवती-शक्ति का आविर्भाव** साधक के समक्ष हुआ था। अब इस अवधि में उसका और भी वर्द्धन हुआ है। वर्द्धित भक्ति के निकट चिर-यौवना **उमा—'कन्या-भाव'** धारण कर लेती है। सन्तान के वृद्ध होने पर जैसे माता कन्या-स्थानीया हो जाती है, उसी प्रकार वृद्धा भक्ति के निकट **उमा** भी **'कन्या-भाव'** धारण करती है। सन्तान द्वारा पालनीया माता सन्तान को जिस भाव से देखती है, आज **उमा** भी वृद्ध भक्त को उसी प्रकार देखती है।

भक्त भी इसीलिए **'वात्सल्य-भाव'** से अपने घर में **देवी का आवाहन** करता है। एक दिन **'मातृ-भक्ति'** से उद्‌बोधित होकर वह जिसका पूजन करता था, आज **'कन्या-वात्सल्य'** से उसका अपने **हृदय-मन्दिर** में आह्वान करता है। वह आह्वान अति मधुर है। इससे मधुरता की ध्वनि व्यञ्जित होती है। यह आगमन **हृदय का आह्वान-गीत** है। देवी भी भक्त के हृदय में आकृष्ट हो रही है। यही **परस्पर आकर्षण की मिलन-ध्वनि** भारत-वासियों का **'शारदीय दुर्गा-पूजनोत्सव'** है।

'आगमनी'—आकर्षण-शक्ति है। **'बोधन'—शक्ति का उदय** है। **प्रतिष्ठा-स्थापन** हो, **मिलन** का फल—**'दश-भुजा दुर्गा'** है।

श्रीदुर्गा देवी की आराधना के प्रसङ्ग में **'राम-रावण-युद्ध'** के व्यापार का विश्लेषण करने पर जिस प्रकार की साधना-प्रणाली दृष्टि-गत होती है, उसको **ज्ञान-वैराग्य-युक्त 'योग-पथ'** कहा जाता है। **दशेन्द्रिय-धारी 'मन'** (दशानन) से कवलित **'आत्म-शक्ति' का उद्धार, महा-शक्ति की कृपा** से कर **आत्म-स्वरूप की प्रतिष्ठा** ही इस साधना-प्रणाली का लक्ष्य है।

दूसरी ओर **उमा-मेनका** के उपाख्यान से **'शुद्ध भक्ति'** का कोमल पथ प्रकट होता है। वसन्त के विमल सौन्दर्य को भक्त साधक ने जिस **'मातृ-भाव'** से अनुभव किया था, वही आज चरमोत्कर्ष को प्राप्त होकर **'वात्सल्य-भाव'** में परिणत हो रहा है। इस वात्सल्य से पाषाण भी पिघल जाता है। इसी वात्सल्य से ऋषि-गण **ईश्वर को हृदय** में स्थापित करते हैं। पुराणों में **यशोदा का वात्सल्य** इसी प्रकार चित्रित है, किन्तु जो वात्सल्य कन्या में स्थापित है, उस वात्सल्य में निमग्न होकर ऋषि-गण ईश्वर को और भी **घनिष्ठ-भाव** से देखते हैं। तब **यशोदा-भाव** तिरोहित होकर **मेनका का भाव** उदय होता है।

माता जिस प्रकार पुत्र से छिपाकर कन्या के स्नेह-पाश में आबद्ध होकर उसकी तृप्ति-हेतु गोपनीय समस्त धनादि उसको प्रदान करती है, भक्त भी उसी प्रकार **हृदय खोलकर सकल सुन्दर वस्तु माँ को अर्पण** करता है। **शारदीय नव-रात्र के दुर्गा-पूजन** में भक्त का यही प्रगाढ़ अनुराग प्रकट होता है।

पुत्र की अपेक्षा कन्या के प्रति माता का स्नेह अधिक होता है क्योंकि कन्या-हृदय पुत्रापेक्षा कोमल होता है। फिर कन्या बड़ी होने पर पर-गृह ही अधिक रहती है। परोक्ष रहने के

कारण माता कन्या के लिए अधिक व्याकुल रहती है। वह कन्या के हित-हेतु सतत अन्यमनस्का रहती है। अतः वह समय-समय पर कन्या को अपने पास लाने का अधिक प्रयत्न करती है। इस यत्न से प्रकट है कि कन्या कितनी आदरणीया है।

कन्या के भी मन में माता के मिलन-हेतु उत्सुकता रहती है। कारण श्वसुर-गृह का समस्त दुःख और कष्ट वह माता से बताती है। दोनों एकत्र होकर नेत्रों से अश्रु-वर्षा कर वक्षः-स्थल आर्द्र कर लेती हैं। जब कन्या ससुराल जाती है, तब मातृ-हृदय करुण क्रन्दन कर उठता है। कन्या की अवस्था भी माता से अधिक ही करुणा-मय हो जाती है। कन्या यदि सुख-पूर्वक है, तो भी माता पूर्ण-रूप से सुखी न होकर कुछ अंश में ही उसको शान्ति रहती है, किन्तु यदि कन्या भिखारिन हो गई है, तो मातृ-हृदय में घोर अशान्ति छा जाती है।

पुराण-कार ने **उमा** और **मेनका** को इसी प्रकार चित्रित किया है। **उमा** के गृह नहीं है, अन्न-वस्त्र नहीं है, स्वामी पागल है, आदर करके **सती** को हर समय मस्तक पर रखते हैं। इसी कारण **मेनका** अशान्त एवं कातरता-परायण रहती है। क्षण-मात्र भी शान्ति नहीं है। हर समय **उमा** के लिए चिन्तित रहती है। **मेनका** राज-रानी है, इसी कारण उसको अधिक कष्ट है। धनैश्वर्य का उसके पास अभाव नहीं है। ऐसे परिवार की एक-मात्र कन्या भिखारी की भार्या है। उसकी माता सुख-पूर्वक गृह में कैसे रह सकती है? अतः वह धन, रत्न, वसन, भूषण, आहार एवं निद्रा छोड़कर दिन व्यतीत करती है।

अपने **इष्ट-देवता** के लिए साधक को इसी प्रकार की व्याकुलता चाहिए। **मेनका** को आदर्श मानकर भारतीय-गण इस **'शारदीय नव-रात्र'** के उत्सव में अपने हृदय में **'आगमनी'** अङ्कित करते हैं। आश्विन की इस **'आगमनी'** में उक्त कातरता उद्‌बोधित होती है। **'मातृ-भक्ति'** में ऐसी व्याकुलता नहीं होती, जैसी माता के हृदय में कन्या के लिए रहती है। एक पल का विरह भी वह सह नहीं सकती।

'भक्ति' की यह एकान्तिकता प्रति वर्ष उद्‌बोधित करने के लिए **'आगमनी'** का ज्ञान भारत-वासी के हृदय में सङ्गीत की तरह ध्वनित होता रहता है। जब भी **'आगमनी'** का स्वर-सङ्गीत भारतीयों के श्रवण-पथ में प्रवेश करता है, तभी वे लोग **'दुर्गोत्सव'** के लिए अधीर हो उठते हैं।

विरह के अधीर साधक **'भक्ति'** की तरफ उन्मुख हो **'दुर्गोत्सव'** की प्रतिष्ठा करता है। जब साधक देखता है कि **चित्त—सत्त्व-गुण** को प्राप्त होकर **शरद् का शुभ्र सौन्दर्य** प्रकट हो रहा है, **आशा— अनाहत-स्वर से गान** कर रही है, तब साधक का अन्तर **आनन्द** से नाच उठता है। क्रमशः दश-दिक् प्रकाश कर, **महा-शक्ति की सकल मूर्ति** ही **'दुर्गोत्सव'**-रूप से उदय हो जाती है।

तब साधक स्वयं को भूल जाता है। उसके **अन्तर में भगवती दुर्गा-मूर्ति से सात्त्विक सौन्दर्य-पूर्ण 'ऐश्वर्य'** और **लक्ष्मी-मूर्ति से 'दिव्य-ज्ञान'** एवं **सरस्वती-मूर्ति से अदम्य 'वीरत्व'** प्रकट करती है, जिससे समस्त **पाप-शक्ति-स्वरूप महिषासुर** विजित होता है। वीरत्व से सम्पूर्ण **'रिपु-कुल'** वशीभूत होता है।

कार्तिकेय-मूर्ति और महा-शक्ति-प्रसूत सिद्धि के **'गणेश्वर'** अग्नि-वत् उज्ज्वल प्रतिमा से प्रत्यक्ष होते हैं। साधक के चारों ओर **शोभा-सौन्दर्य का भण्डार** विकीर्ण हो जाता है। उसके हृदय में

दृढ़-भक्ति एवं **अहैतुक प्रेम** उत्पन्न होता है।

दिव्य-ज्ञान के प्रभाव से साधक को अब अनुभव होता है कि स्त्री-पुत्र, धनैश्वर्य—कुछ भी नहीं है। यहाँ अपना कुछ नहीं है—सब कुछ ही **'महा-शक्ति'** का है। वह **चराचर-विश्व-व्यापिनी विश्वेश्वरी** ही सत्य है। **कैवल्य-ज्ञान** से असत्य दूर होकर साधक के अन्तर में प्रकाश-मण्डल की मध्य-वर्तिनी उस **नित्य लीला-मयी की प्रेम-लीला-माधुर्य-मूर्ति में साधक अनन्त-काल के लिए लीन** हो जाता है। इस प्रकार **'शरदोत्सव'** का **'दुर्गा-पूजन'** एवं **विजया की प्रतिष्ठा** साधक-हृदय में स्थापित होती है।

साधना के फल-स्वरूप भक्त के हृदय में ठीक इसी प्रकार की अनुभूति होती है। भारतीय ऋषियों ने समाज के लिए **साधना-सिद्धि** का यह आदर्श नयन-छवि रूप से जागरूक करना आवश्यक समझकर, प्रति-वर्ष **शरद् के शुभ्र सौन्दर्य में 'दुर्गा - पूजनोत्सव'** - रूप से **प्रतिमा प्रतिष्ठित करके पूजन** करने का निर्देश किया है। हृदय के उक्त **आभ्यन्तरीय व्यापार का बाह्य विकास ही— 'दुर्गा-पूजनोत्सव'** है।

जिस भाव से भारतीय सन्तान **माँ का पूजन** करती आई है, हम आज उस भाव को भूल गए हैं और **बाह्य सौन्दर्य के उपासक** हो रहे हैं। यह पाश्चात्य शिक्षा-दीक्षा का प्रभाव है। हम **माँ के नाम से कामना-पूर्वक पूजन** कर, कुछ समय **बाह्य आमोद-आह्लाद** पाकर उत्साहित होते हैं, किन्तु **दशमी** के दिन सब कुछ **विसर्जित** कर **'विजया' की प्रतिष्ठा** नहीं कर पाते।

शरद् के सुख-मय सौन्दर्य में माँ का स्वरूप जानना; दूर प्रवास में जननी की कथा-स्मरण होने पर सन्तान को जिस प्रकार की आकुलता होती है, उसी प्रकार की आकुलता से **व्याकुल-प्राण हो 'माँ-माँ' स्वर से सुप्त माता को जगाकर उठाना** होगा। माँ आप लोगों को गोद में लेकर **स्वाधार-निद्रिता** है। अतः **सुप्ता माता को जगाने हेतु बोधन** करें, तभी **'विजया'** की प्रतिष्ठा होगी।

'दुर्गा-पूजनोत्सव' के दो प्रधान अङ्ग हैं—एक **'आगमनी'**, अन्य **'विजया'**। **'आगमनी'** में **'कैलाश-धाम'** से माँ का **'हिमालय-गृह'** में आगमन एवं **सप्तमी, अष्टमी** व **नवमी**—इन तीन दिन **पितृ-गृह में माँ की उपस्थिति, दशमी** को **'विजया'** का विसर्जन अथवा **माँ का 'स्वामी-गृह-गमन'**।

हम लोग शैशव-काल से ही **माँ का यह आगमन, उपस्थिति, गमन** या **विसर्जन** देखते आए हैं। धनी धन के प्रयोग से, विलासी विलास-व्यसन से, रूप-वान रूप-साज से पूर्ण-विधान करके, पूजन के इन दिनों को खूब आमोद-आह्लाद-सहित धूम-धाम से व्यतीत कर अपने मन में **आनन्द का अनुभव** करते हैं कि **माँ का पूजन** बड़े धूम-धाम से सम्पन्न हुआ है; समय और अर्थ का यथेष्ट सदुपयोग हुआ है, किन्तु प्रकृत-पक्ष में हिन्दुओं के इस **'दुर्गा-पूजनोत्सव' का उद्देश्य** क्या है? क्या **बाह्य आमोद-प्रमोद** मात्र ही इसका उद्देश्य है?

जिन ऋषि-गण ने एक दिन अपनी ज्ञान-गरिमा से जगत् में शीर्ष-स्थान ग्रहण कर रखा था, उनका मस्तिष्क क्या केवल इतना ही विवेक-युक्त था कि एक बालक की तरह **'क्रीड़ा-कौतुक-व्यवस्था'** समाज के लिए करें? ऐसा कभी भी सम्भव नहीं है।

पुण्य-भूमि भारत-वर्ष **'रत्नाकर'** है। उसके रत्न-गर्भ में बहु-काल से प्रखर **श्री-शक्ति-सम्पन्न महा-मनीषी-गण** जन्म ग्रहण करते आए हैं।

अतः उनका **अनुष्ठेय कर्म— अ-वैज्ञानिक** या **तथ्य-हीन** नहीं हो सकता। उनके द्वारा अनुष्ठित प्रत्येक कार्य में—क्रिया-कलाप में **परम सत्य** निहित है। वे लोग **सत्य-स्वरूपा 'महा-शक्ति'** को जानते थे और **विमल सत्य की उपलब्धि** भी की थी एवं **त्रि-कालज्ञ** थे। अतः वे लोग अपने साधारण वंश-धरों के लिए **बाह्य आमोद-प्रमोद के भीतर सत्य का गोपन** कर गए हैं।

भारतीय ऋषि यह भली प्रकार जानते थे कि एक दिन हमारे वंश-धर **सत्य की अमल-धवल विमल ज्योति** को भूलकर **तामसिक** और **राजसिक भाव** से आत्म-सम्मिश्रण कर **रूप के मोह** में डूब जाएँगे; वे **अपनी सत्ता** भूल कर अपने को भूल जाएँगे। **ऋषि-गण** उदार थे। अतः **बाह्य आमोद-प्रमोद के भीतर रहस्य-मय 'सत्य' का गोपन** वे कर गए हैं, जिससे आमोद-प्रमोद करते-करते स्वर्ण-प्राप्ति की तरह एक दिन किसी के हृदय में **'सत्य-प्राप्ति'** की पिपासा जाग्रत हो जाए और वह **सत्य का अनुसन्धान** कर सके।

'आगमनी' का तात्पर्य है— **माँ का पितृ-गृह में आगमन** अर्थात् **जब जीव त्रि-ताप-ज्वाला से दग्ध होता है एवं उसका हृदय पाप-ताप की असह्य ताड़ना से अधीर हो उठता है; जब जीव समझ जाता है कि भोग-सुख से तृप्ति नहीं है, सन्तोष नहीं है, तभी उसके प्राणों में 'सत्य' के अनुसन्धान की प्रबल इच्छा जागृत होती है। उसका हृदय सत्य की प्रतिष्ठा करने हेतु व्याकुल होगा। यही 'आगमनी' या माँ का आह्वान है एवं यही है 'कैलास' में गौरी' को लाने के लिए 'हिमालय' का गमन और 'मेनका' का कर्तृक-बोधन।**

'सप्तमी-पूजा' अर्थात् इस दिन माँ की **प्रथम पूजा— सत्य का ईषत् आभास** है, जैसे उषा के आगमनी-समय पूर्व में **ईषत्-आलोक** होता है और अन्धकार क्रमशः दूर होता है। **'सप्तमी-पूजन'** से भी इसी प्रकार **साधक के चिदाकाश में ज्ञान-रवि का ईषत् उन्मेष होकर तामसिक भाव विदूरित** होता है।

'अष्टमी' अर्थात् पूर्व-दिशा रक्त-वर्ण-रञ्जित हो गई है और अन्धकार भी प्रायः दूर हो गया है। इस समय साधक भी जगत् में **एक स्तर ऊर्ध्व** में उठा है, **तामसिक भाव** दूर हुआ है एवं **राजसिक भाव का पूर्ण विकास** प्राप्त हुआ है। इस स्थान में साधक की अज्ञानता-वश आधार न होने से पतन की अत्यधिक सम्भावना रहती है। यह स्थान **राजसिक-सात्त्विक भावों का सङ्गम-स्थल** है। अतः **साधक की भीषण परीक्षा** का यह स्थल है। इसलिए **'अष्टमी-नवमी-पूजन'** के संयोग स्थल को **'सन्धि-पूजन'** कहते हैं।

'नवमी' में **सम्पूर्ण-रूप से सूर्य का उदय** हो गया है, **अन्धकार का पलायन** भी हो गया है और समस्त **बाधा-विघ्न** दूर हो गए हैं। इस समय **किसी भी विषय में द्विधा नहीं** है। इसीलिए **'नवमी-पूजन'** का इतना समारोह है। साधक इस अवस्था में **एक और स्तर ऊर्ध्व में** उठ गया है। इस स्थल से साधक के **पतन की आशङ्का नहीं** है क्योंकि **तामसिक** और **राजसिक भाव** सब पूर्ण रूप से परिष्कृत हो गए हैं। साधक ने इस समय **सत्य के विकास** को उपलब्ध किया है। साधक **माँ की मनो-मयी मूर्ति** को **हृदय-मन्दिर में प्रत्यक्ष** देखता है, अतः उसके **आनन्द की सीमा नहीं** है। इसलिए **'नवमी-पूजन'** का इतना आडम्बर, इतना आयोजन और समारोह है।

'दशमी' में **विजया** या **विसर्जन** की अवस्था में साधक ने **सर्व-विषय में सफलता** प्राप्त कर ली है और अपने **अभीष्ट साधन में कृत-कार्य** हो गया है। अथवा साधक ने **बाह्य आडम्बर परित्याग कर प्रत्यक्ष सत्योपलब्धि** कर ली है और **हृदय में सत्य की प्रतिष्ठा** स्थापित की है।

(शेष पृष्ठ २०१ के नीचे)

शारदीय महा-पूजा-महोत्सव

❖ श्री पण्डित सत्यानन्द झा

शरत्-काले महा-पूजा, क्रियते या च वार्षिकी।
तस्यां ममैतन्माहात्म्यं, श्रुत्वा भक्ति-समन्वितः।।

मार्कण्डेय-पुराणोक्त **'देवी-माहात्म्य'** में कहा गया है कि **'शरत्-काल** में जो **वार्षिक महा-पूजा** की जाती है, उसमें हमारा यह माहात्म्य भक्ति से जो श्रवण करता है।' इससे यह सिद्ध होता है कि **देवी-माहात्म्य का पाठ** करना **शारदीय महा-पूजा** का एक अङ्ग है।

'महा-काल-संहिता' में कहा गया है—

होमः सप्तशती-पाठो, बलिर्वादित्र-वादनम्।
चतुरङ्गमिदं शस्तमासीषे कालिकार्चने।।

आश्विन मास में **कालिकार्चन** में **१ होम, २ सप्तशती-पाठ, ३ बलि-दान** और **४ गीत-वाद्य**— ये चार अङ्ग हैं, केवल **पाठ** मात्र ही नहीं।

शारदीय महा-पूजा के तीन प्रकार के भेद 'कालिका-पुराण' में कहे गए हैं—

उग्र-चण्डा च या मूर्तिरष्टादश-भुजाऽभवत्।
सा नवम्यां पुरा कृष्ण-पक्षे कन्या-गते रवौ।।
प्रादुर्भूता महा-घोरा, योगिनी-कोटिभिः सह।
अतोऽत्र पूजनीया सा, सर्वैरपि सुरासुरैः।।

अर्थात् **आश्विन कृष्ण नवमी** तिथि में **अष्टादश-भुजा उग्र-चण्डा** मूर्ति **योगिनी-गण**-सहित प्रादुर्भूत हुई थी। अतः समस्त सुरासुर-द्वारा पूजनीया है। 'महा-काल-संहिता' में लिखा है—

(पृष्ठ २०० का शेषांश)

इस स्थल में **'विजया'** या **'विसर्जन'** का अर्थ **माँ का त्याग** नहीं है। **'विसर्जन' का अर्थ** है— **राजसिक, तामसिक भावों का मूलोच्छेदन** अर्थात् **काम, क्रोध, लोभ, मोह, हिंसा, कुटिलता, मिथ्या प्रतारणा, प्रवञ्चनादि, असत्य के उच्छेद का साधन** करने पर साधक सत्त्व-गुण-सम्पन्न होकर **सत्त्व (महा-शक्ति) में प्रतिष्ठित** हो गया है या **माँ को हृदय में प्रतिष्ठित** कर लिया है। अब **साधक ने माँ को प्राप्त कर लिया** है। अतः **बाह्य पूजन** केवल लोक-संग्रह-हेतु ही आवश्यक है। वस्तुतः उसका प्रयोजन नहीं है। अतः **दशमी** के दिन **प्रतिमा-विसर्जन** कर **विजया या माँ की प्रतिष्ठा का अनुष्ठान** सम्पन्न किया जाता है।

एक स्थान में एक समय में दो विरुद्ध वस्तुएँ नहीं रह सकतीं, यह स्वतः सिद्ध है। प्रत्येक कार्य में **असत्य का विसर्जन** न होने पर, **सत्य की प्राप्ति** कैसे होगी एवं **विजय-लाभ** भी कैसे होगा? अतः **'प्रतिष्ठा'** ही **'विसर्जन'** या **'विजया'** और **'विसर्जन'** ही **'प्रतिष्ठा'** है।

'विजया' से हम लोग **सत्य में प्रतिष्ठित होकर भेदाभेद, शत्रु-मित्र, अपने-पराए का विस्मरण कर समग्र समाज-जगत् में माँ के ही स्वरूप की अभिव्यक्ति समझ कर जगत् में अपने को 'मातृ-मय'** भावना करते हैं।

अतः आओ बन्धु! **'विजया'** के शुभ मिलन में भाई-भाई आलिङ्गन कर एक दूसरे के अपराध भूल कर **पाशविक वृत्ति-समूह** को सदा के लिए विदूरित कर **'जय माँ विजये'** नाम से **विजय-दुन्दुभी** बजाते-बजाते **हृदय में विजया की प्रतिष्ठा** कर **हम महा-शक्ति के पुत्र महा-शक्ति लाभ करें।** ह्रीं श्रीरस्तु।

शारद्यां तु त्रयो भेदाः, कथ्यन्ते ते मयाऽधुना।
आश्विनासित-पक्षस्य, नवमी या शिवर्क्ष-युक्।।
बोधयित्वेश्वरीं तस्यां, शरदर्चनमारभेत्।
यावत् स्यान्नवमी शुक्ला, तावत् पूजा प्रवर्त्तते।।

अर्थात् **आश्विन कृष्ण** आर्द्रा-नक्षत्र-युक्त **नवमी** में **बोधन** करके **शुक्ल-नवमी** तक **दुर्गा का पूजन** होता है—

नक्षत्राणामलाभे तु, केवलासु तिथिष्वपि।
करवाले बोधयेयुः, मध्याह्ने शङ्ख-निस्वनैः।।

अर्थात् नक्षत्र-प्राप्ति न होने से केवल **नवमी** तिथि के **मध्याह्न-काल में शङ्खादि वाद्य-वादन** करके **बोधन** करना चाहिए। वहीं यह भी लिखा है—

प्रतिपद्येव शुक्लायां, बोधयित्वा सुरेश्वरीम्।
अभ्यर्चयेन्नवाहानि, तन्त्र - पौराणिक-क्रमैः।।
उदीरितो द्वितीयोऽयं, तृतीयं कथयाम्यथ।
सायाह्ने बिल्व-शाखायां, षष्ठ्यां देवीं प्रबोधयेत्।।
प्रातः प्रवर्त्तते पूजा, सप्तम्यादि - दिन - त्रये।
• इयं हि शारदी पूजा, मूर्ति-भेदात् त्रिधा मता।।

अर्थात् **शुक्ल प्रतिपदा में बोधन** करके **महा-नवमी** तक तन्त्र व पुराण-मत से **देवी-पूजा** करना द्वितीय क्रम है। **षष्ठी तिथि** के सायं-काल में **बिल्व-शाखा** में और अगले दिन के प्रातः-काल से **सप्तमी आदि तीन दिन** पूजन करना— यह **शारदीय पूजा** का मूर्ति-भेद से तीसरा प्रकार है।

येऽष्टादश - भुजां देवीमुग्र - चण्डाभिधां प्रिये!
पिपूजयिषवो मर्त्या, तदुपास - गतामिताः।।
तथाऽऽश्विन-नवम्यां वै, कृष्णायां सु-समाहिताः।
अथ माध्यमिकः पक्षः, ईषस्याद्य-तिथौ सिते।।
ईश्वरीं षोडश-भुजां, भद्र-कालीति नामिकाम्।
सम्बोध्य ये पूजयेयुर्दिनानि नव वै प्रिये!।।
अश्व-युक् स्थित-षष्ठ्यां वै, शाखायां बिल्व-शाखिनः।
सायं - काले बोधयित्वा, वाद्यैरुच्चावतोद्भवैः।।
दुर्गा - देवीमर्चयित्वा, सप्तम्यादि - दिन - त्रये।

अर्थात् **अष्टादश-भुजा उग्र-चण्डा देवी** का पूजन **आश्विन कृष्ण नवमी** से आरम्भ करके **महा-नवमी** पर्यन्त, **षोडश-भुजा भद्र-काली देवी** का पूजन **शुक्ल प्रतिपदा** से **महा-नवमी** तक, **दश-भुजा कात्यायनी दुर्गा देवी** की पूजा **षष्ठी तिथि** के सायं-काल में **बिल्व में बोधन** कर **सप्तमी** से लेकर तीन दिन तक **मृण्मयी मूर्ति** या **पत्रिका** में यथा विभव विस्तर **बलि-होमादि** से पूजन करना चाहिए। 'महा-काल-संहिता' में लिखा है—

अष्टमी-नवमी-सन्धौ, कुर्वते केचिदर्चनम्।
तत्-सन्धि-पूजनमिति, पुराणादिषु कीर्तितम्।।
अष्टम्यामर्द्ध - रात्रे वा, तत्परेणापि पूजनम्।
तान्त्रिकाः केचिदिच्छन्ति, सिद्धि तूभयथाऽर्चने।।
चामुण्डा-रूप-धारिण्यास्तत्र देव्यास्तु पूजनम्।
विहितं नान्य-रूपिण्याः, कृत इत्येष निर्णयः।।

अर्थात् **अष्टमी-नवमी के सन्धि-काल में पूजन** करना पुराण-सम्मत है। **अष्टमी की अर्ध-रात्रि** में और तत्पश्चात् चार दण्ड तक पूजन तान्त्रिकों के लिए है। इस क्षण में **चामुण्डा देवी का पूजन** कर्त्तव्य है, दूसरी रूप-धारिणी देवी का नहीं।

शारदीय पूजा के सम्बन्ध में 'सौभाग्य-भास्कर' में लिखा है—

पूजनीया जनैर्देवी, स्थाने-स्थाने पुरे - पुरे।
गृहे - गृहे शक्ति-परैर्गामे ग्रामे वने-वने।।
स्नातैः प्रमुदितैर्हृष्टैर्ब्राह्मणैर्क्षत्रियैर्विशैः।
शूद्रैर्भक्ति-युतैर्म्लेच्छरन्यश्च भुवि मानवैः।।

अर्थात् **दुर्गा देवी के महोत्सव** में नगर-ग्राम-वन-निवासी समस्त वर्ण सवरादि जाति को **भगवती का पूजन** करना चाहिए। ✻

'ऋग्वेद' में शारदीय दुर्गा-पूजा

❖ पण्डित भूपेन्द्रनाथ वन्द्योपाध्याय

'देवी' अथवा **'शक्ति'**, **वेद** से अलग नहीं है। **'शक्ति-उपासक'** विशेष उच्चाङ्ग की साधना और उपासना करता है। **'शक्ति'** कहिए या **'देवी'** कहिए—वह **'ब्रह्म'** से भिन्न नहीं है—केवल उपासना में प्रकार-भेद-मात्र है। वास्तव में **'दुर्गा'**, **'शक्ति'** और **'शारदीया दुर्गा-पूजा'** वेदान्तर्गत ही हैं।

'वेद' में प्रत्येक **'मन्त्र'** उपासना है—मन की प्रार्थना है, शुभ कामना है। **'ऋग्वेद'** में **प्रथम सूक्त** ही **'अग्नि की उपासना'** है। **'अग्निमीडे'** अर्थात् **'अग्निं स्तौमि'**।

'दुर्गा देवी' ही **अग्नि की शक्ति** हैं। **'दुर्गा देवी'— तेजो-मयी** हैं, वेदोक्त **समस्त अग्नि-गुण-सम्पन्ना** हैं। **'दुर्गा'** का एक नाम **'ज्वाला-मुखी'** भी है। अग्नि में जो **दाहिका-शक्ति** है, वह **जगज्जननी 'दुर्गा'** ही है, यथा—

सा वाणी सा च सावित्री, विप्राधिष्ठातृ-देवता।
वह्नौ सा दाहिका शक्तिः, प्रभा-शक्तिश्च भास्करे।।

ऋग्वेदोक्ता सभी शक्तियाँ **दुर्गा** ही हैं।

निम्न-लिखित वेदोक्त मन्त्र (**ऋग्वेद** ४ सं, ४० सू, ५ ऋ) की व्याख्या से **श्रीपञ्चानन तर्क-रत्न महाशय (वसुमती,** आश्विन-१३४५ में) यह प्रमाणित करते हैं कि **'ऋग्वेद-काल' में 'शारदीया दुर्गा-पूजा'** प्रचलित थी—

हंसः शुचिषद् - वसुरन्तरिक्ष,
सद्धोताऽवेदिषदतिथिर्दुरोणसत्।
नृषद्-वर-सद् ऋत सद्-व्योम-सदब्जा,
गोजा ऋतजा अद्रिजा ऋतम्।।

हंसः (१)। **शुचिषद्** (१०)। **वसुः** (११)। **अन्तरिक्ष सत्** (१२)। **होता** (६)। **अवेत्** (२)। **इषदतिथिः** (८)। **दुरोणसत्** (५)। **नृषद्-वर सत्** (६)। **ऋत सत्** (७)। **व्योम सत्** (१३)। **अब्जा** (१४)। **गोजा** (१५)। **ऋतजा** (१६)। **अद्रिजा** (३)। **ऋतम्** (४)।

(१) **हंसः** (सूर्यः)। (२) **अवेत्** (ज्ञातवान्)। **किं अवेतदाह।** (३) **अद्रिजा** (पार्वती)। (४) **ऋतम्** (ब्रह्म)।

(५) **दुरोणसत्**—**दुर्गा नाम्नि स्थिता**—**दुरोणे दुर्गा नाम्नि सीदति निषीदति, दुरोण दुर्गा-नाम सीदति प्राप्नोति इति वा (दुर् इति मृत्यु-हीना देवता, तद्-ब्रह्मैव, तद् वाचका दुर इति शब्दः) ओणः अपनयन-कर्ता, तद्-वाचक 'गा' शब्दः, तयोः समाहारः ओणृ—अप-नयने, इत्यस्मात् ओणृ-धातोः पचादित्वादच्। दुरोणम्। एवं च श्रुतिर्गा, इत्यस्य यमर्थमाह ओणस्याषि, स एवार्थः। तेन चार्थेन 'गा', इत्यस्योपस्थित्या दुरोण-शब्दः दुर्गा-नाम-परः, श्रुतिश्च सा वा एषा देवता दूर्नाम एतासाम् देवतानाम् पाप्मानां मृत्युमपहत्य यत्रासाम् दिशामन्तस्तद्-गमयाश्चकार। (बृह —१।३।६।१०)**

'श्रुतिस्थ गमयां चकार उक्त मन्त्रस्थ ओण'—इसका स्थलाभिषिक्त है। **'गा'**-शब्द उसी से प्रतिपाद्य है। इस **'श्रुति'** का स्पष्ट अर्थ है—**प्राण-देवता का नाम** (इस स्थान में **प्राण-देवता = ब्रह्म**)। मृत्यु उनके निकट आने में असमर्थ है। इसलिए उनका नाम **'दुर'** है। सब **देवताओं** का अर्थात् समस्त **इन्द्रियों का पाप** दूर करके दिगन्त में अपसारित किया, इस कारण यह **'गा'**

कहलाती है। **'अपसरण'** और **'अपनयन'** एकार्थक हैं। जो देवता अपने प्रवर्तित प्राणों द्वारा सब इन्द्रियों का पाप-गत करती हैं; निवारण करती हैं, अपनीत करती हैं, उनका नाम है **'दुर्गा'**। इसी कारण **'दुर्गा'**-नाम से वह प्रतिष्ठिता है— इसी कारण वे **'दुरोणसत्'** हैं।

(६) **नृषद्-वर सत्**—नृण् पुरुषान् सीदति, विशृ-णाति हिनस्ति पदलृ-विशरण गत्यवसानेषु इति सदधातो रूपम्। नृषदाम् श्वापदानां वरः श्रेष्ठः मृग-राजः सिंहः। तेन सीदति गच्छति, सिंह-वाहना।

(७) **ऋत-सत्**—ऋते पूजिते सीदति निषीदति। पूजित-शब्देन महिषासुरो ग्राह्यः, यतः एतासु मूर्तिषु सदा पाद-लग्नो नृणां सदा। पूज्यो भविष्यसि त्वं वै-इति देव्या वरो दत्तः।

(८) **इषदतिथि**—इषम्— आश्विन - मासम् दायन्ति दक्षिणायनत्वेऽपि शुद्धं कुर्वन्ति, इति इषदाः। आश्विन-मासे यावन्यस्तिथयो यस्य दैव-शोधने इति धातोः सुवन्तोपपदात् 'क'-प्रत्ययेन इषदा इत्यस्य सिद्धेः। कृष्ण-नवम्यादि महा-नवमी-पर्यन्त तिथेस्तत्-सम्बन्धित्वमुक्तम्।

(९) तत्रापि **'होता'** हवन-निष्पादकः स्थाली पचतीविवत् हवनस्याश्रयः इति तात्पर्यम्।

(१०) **शुचिषत्**—शुचौ शुद्ध-भावे सीदति निषीदति शुद्ध-भावं प्राप्नोतीति वा, तेन मुनिरुच्यते। मुनि-शब्दस्य सप्तमी तिथिः परत्वम् निगमे दृश्यते। षण् मुन्योर्वसुरन्धयो इति।

(११) **वसुः**—वसु-शब्देनाष्टमी लभ्यते। निगम-वचनादौ प्रसिद्धेः।

(१२) **अन्तरिक्ष सत्**—ग्रह-गणाः तेन नवमी-तिथेर्लाभः। ग्रह-शब्दो नवत्व - संख्या-वाचकस्तस्य ज्योतिष-शास्त्र-प्रसिद्धेः। होतृत्वं हवनाधारत्वं, तस्यान्ते विवेशात् शुचिषदिति पदार्थः त्रयार्थं सप्तम्यादि-तिथि-त्रयेण तदन्वयः, अन्तरिक्ष-सदित्येकेन वा।

(१३) **व्योम सत्**— व्योम्नि दहराकाशे अन्तराकाशे सीदति निषीदति, बाह्य-पूजा दर्शिता। व्योम सदित्यनेन होतेत्यनेन मानस-पूजा सूचिता।

(१४) **अब्जा**—लक्ष्मीः क्षीरोदधि-जातत्वात् मम योनिरप्स्वान्तः समुद्रे इति देवी-सूक्त-मन्त्रेण तथावगमाच्च।

(१५) **गोजा**—गवि वाचि जायते प्रकाशते इति वाग्-देवी।

(१६) **ऋतजौ**—कार्तिकेय-गणेशौ, ऋतात् ब्रह्मणः पार्वती-स्वरूपात् शिव-स्वरूपाद् वा जायते ऋतजः, तौ ऋतजौ। अद्रिजा वकार-लोपात् ऋतजा अद्रिजा।

इस मन्त्र का नाम **'हंसावती ऋचा'** है। इसका भावानुवाद निम्न-लिखित है—

सूर्य-देव को यह ज्ञात हुआ कि **पार्वती— पर-ब्रह्म** हैं, **सिंह-वाहिनी** और **महिषासुर-निहित-पृष्ठ-चरणा दुर्गा-मूर्ति** हैं। **आश्विन मास** और **पावनी तिथि-समूह** से उनका विशेष सम्बन्ध है। उनमें **सप्तमी, महाऽष्टमी** और **महा-नवमी** तिथि में **होम** करने की विधि है। असमर्थ होने से केवल **महा-नवमी** के दिन ही **हवन** करना चाहिए। **स्नान, पूजा, बलि-दान** और **होम**— इस **चतुः-कर्म-मयी महा-पूजा** के चारों कर्म निर्वाह करने चाहिए।

इस **चतुः-कर्म-मयी पूजा** से यह नहीं समझना चाहिए कि यह पूजा केवल **बाह्यिक** है। इस मन्त्र में **'व्योम सत्'**-शब्द उनके समूह को सूचित करता है। **'व्योम सत्'**-शब्द साधारण व्योम नहीं है। यह **'दहराकाश'** है, जिसका भावार्थ **'सूक्ष्म हृदयाकाश'** है। **पार्वती** वहीं ध्येया हैं। व्यापिका होने पर भी देवी वहीं स्थिता हैं—उनको वहीं खोजना चाहिए।

(शेष पृष्ठ २०५ के नीचे)

शारदीय महोत्सव

❖ 'कुल-शिरोमणि' धन शमशेर जङ्गबहादुर राणा

आश्विन में प्रति-वर्ष हिन्दू मात्र के घर में **श्री जगदम्बा का अर्चन** होता है। **छहों आम्नायों से पूजित दुर्गा**-रूप की ही विशेषतः सपर्या होती है। जिन-जिनकी जिस-जिस आम्नाय की दीक्षा है, उन-उन आम्नाय से **'दुर्गा-पूजा'** होती है।

कल्प-भेद से **'दुर्गा पूजा'** तीन प्रकार से होती है। 'महा-काल-संहिता' में लिखा है कि—

'उत्तम-कल्प' में **अष्टादश-भुजा** को **'उग्र-चण्डा'** नाम से करवाल में **आश्विन कृष्ण नवमी** के मध्याह्न में प्रबोधन कर, **आश्विन-शुक्ल नवमी** तक **१६ दिन** उनका अर्चन कर **दशमी में विसर्जन** करे।

'मध्यम-कल्प' में **आश्विन-शुक्ल प्रतिपत्** के प्रातः **घट, यन्त्र** अथवा **प्रतिमा** में **षोडश-भुजा दुर्गा** का **'भद्र-काली'** नाम से प्रबोधन कर, उनका **नवमी** तक **९ दिन** अर्चन कर **दशमी में विसर्जन** करे।

'तृतीय-कल्प' में **आश्विन शुक्ल षष्ठी** में **बिल्व**-शाखा में सायं-काल **दश-भुजा दुर्गा** का **'कात्यायनी'** नाम से **बिल्व**-युग में प्रबोधन कर, **सप्तमी** में स्व-गृह में लाकर स्थापित कर उनका **तीन** दिन पूजन कर **दशमी में विसर्जन** करे।

'उत्तम-कल्प' एवं **'तृतीय-कल्प'** के विषय में सभी ग्रन्थों का एक ही मत है, परन्तु **'मध्यम-कल्प'** अर्थात् **'भद्र-काली'-कल्प** के सम्बन्ध में 'लिङ्ग-पुराण' में लिखा है कि—''**षोडश-भुजा 'भद्र-काली-कल्प'** में **आश्विन कृष्ण एकादशी** में उपवास कर, **द्वादशी** में एक-भक्त बन, **त्रयोदशी** में नक्त-भोजी होकर, **चतुर्दशी** में यन्त्र अथवा मूर्ति में प्रबोधन करे।''

'यामल' में लिखा है कि—**'प्रतिपदा** में ही **कलश-स्थापन** होना चाहिए।' इस उक्ति के अनुसार **तीनों ही कल्पों में प्रतिपत् में ही 'कलश-स्थापन'** होता है, परन्तु **'पूजा'** का विधान पृथक् है।

(पृष्ठ २०४ का शेषांश)

देवी की जैसी **'बाह्य-पूजा'** है, उसी प्रकार **'मानस-पूजा'** भी है। **'हृदयाकाश' में देव्युपासना** उनकी **'मानस पूजा'** है।

'हृदयाकाश' में देवी की अवस्थिति सूक्ष्म भी है और स्थूल भी। स्थूल-रूप में देवी— **लक्ष्मी** और **सरस्वती** हैं, **कार्तिकेय** और **गणेश** हैं। स्थूल-रूप उनकी इच्छा की महिमा है।

उपनिषद् में **पर-ब्रह्म देवी** सर्वत्र विराजिता हैं। **एकाग्र-चित्त** सांसारिक मनुष्य **श्रेष्ठ प्रतिमा-पूजक** है। हृदय में जो **'व्योम-सत्'** है, एकाग्र-चित्त साधक उसकी पूजा **'शारदीया दुर्गा की प्रतिमा'** में करता है।

उसके अनन्तर **'बाह्य-पूजा'** है— इस पूजा में भी साधक **'हृदयाकाश'** को विशाल-रूप से अनुभव करता है।

एकाग्र-चित्त व्यक्ति यदि प्रतिमा में **एकत्व-बोध से चिन्मयी और मृण्मयी देवी की साधना** करे, तो उसके पश्चात् **निरुद्ध अवस्था** आती है। इस अवस्था में उसकी **'मातृ-साधना'** केवल **हृदय** में ही रहती है।

'उग्र-चण्डा-कल्प' में **आश्विन कृष्णा नवमी** में करवाल में **महा-माया का मध्याह्न में प्रबोधन** कर, **उग्र-चण्डा** का **द्वा-त्रिंशाक्षर मन्त्र** से पूजन तथा **आवरण-पूजन** भी किया जाता है। यह पूजा **अमावास्या** तक होती है। फिर **प्रतिपत्** में **'घट-स्थापन'** कर उसके निकट अथवा ऊपर उस **करवाल का स्थापन** कर, उसमें पूर्व-वत् **पूजा** कर प्रति-दिन पृथक्-पृथक् **'नव-दुर्गाओं' की पूजा** करे।

'उग्र-चण्डा-कल्प' में **नव-दुर्गाओं** के नाम हैं—**१ रुद्र - चण्डा, २ प्रचण्डा, ३ चण्डोग्रा, ४ चण्ड-नायिका, ५ चण्डा, ६ चण्ड-वती, ७ चण्ड-रूपा, ८ अति-चण्डिका, ९ उग्र-चण्डा।**

'भद्र-काली-कल्प' में **'घट-स्थापन'** के दिन से ही पूजा का आरम्भ होगा, परन्तु **कृष्णा चतुर्दशी** में **महा-माया का यन्त्र अथवा मूर्ति में प्रबोधन** कर, **दुर्गा भद्र-काली की सपर्या** की जाती है। **अमा** में भी इसी प्रकार **पूजा** कर **प्रतिपत् में 'घट-स्थापन'** कर, उसके ऊपर अथवा निकट उस **यन्त्र** अथवा **प्रतिमा** का स्थापन कर प्रति-दिन पृथक्-पृथक् **नव-दुर्गाओं की पूजा** करे।

'भद्र-काली-कल्प' में नव-दुर्गाओं के नाम हैं—**१ शैल-पुत्री, २ ब्रह्म-चारिणी, ३ चन्द्र-घण्टा, ४ कूष्माण्डा, ५ स्कन्द-माता, ६ कात्यायनी, ७ काल-रात्रि, ८ महा-गौरी, ९ सिद्धि-दात्री।**

'कात्यायनी-कल्प' में केवल तीन दिन की ही पूजा है, परन्तु **घट-स्थापन प्रतिपत् में ही** होता है। उसमें **षष्ठी** तथा **सप्तमी** में प्रातः तक केवल **दुर्गा के अष्टाक्षर मन्त्र से पूजा** होती है। **षष्ठी** के **सायं-काल** में **प्रबोधित बिल्व** तथा **नव-पत्रिकाएँ सप्तमी** में उस **घट** पर रखकर **तीन दिन विशेष पूजा** होती है।

'वृहद्-बडवानल-तन्त्र' के यागादि-पटल में लिखा है कि ''क्रम-दीक्षा-प्राप्त वीर लोग **'घट-स्थापन'** कर, उस घट में **'नव-दुर्गा'** के क्रम से पूजा कर रात्रि में स्वेष्ट-देवी के क्रमार्चन-पूर्वक सुवासिनी-पूजन कर **'तत्त्व-शुद्धि'** करें।''

इस विषय की एक प्राचीन पद्धति, जो मेरे गुरु-देव ने मुझे देने की कृपा की है, उसमें प्रातः, मध्याह्न तथा सायं—**त्रि-काल की पूजा** बताई है। सं० १९९२ से मैं इसी पद्धति के अनुसार अर्चन कर रहा हूँ और मुझे इससे विविध प्रकार के अनुभव हुए है। उक्त पद्धति के सङ्कल्प में अनेक काम्य वचन लिखे हैं, परन्तु मैं केवल **'श्रीविद्याङ्गत्व-प्राप्तये'** का प्रयोग करता हूँ। उक्त पद्धति का संक्षिप्त विवरण यहाँ दे रहा हूँ—

प्राचीन पद्धति का विवरण

आश्विन कृष्णा नवमी के मध्याह्न में **पूजा-गृह** में जाकर, कर्म-कुब्जिका की अर्चना कर, **दीपादि-स्थापन** कर, **करवाल** रख, उसमें **अष्टादश-भुजी उग्र-चण्डा** का ध्यान-पूर्वक **आवाहन** कर, पश्चिमाम्नाय से **उग्र-चण्डा के द्वा-त्रिंशाक्षर मन्त्र** से यथोक्त कुल-कल्प से पूजन कर, **छाग-बलि** करे। तत्पश्चात् निम्न प्रार्थना करे—

ॐ रावणस्य बधार्थाय, रामस्यानुग्रहाय च।
अकाले ब्रह्मणा बोधो, देव्यास्त्वयि कृतः पुरा॥
अहमप्याश्विने कृष्णे, नवम्यां बोधयाम्यहम्॥

इसके बाद पञ्च-तार **'ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं'** तथा **'भगवति श्रीमन्-महोग्र-चण्डिके दुर्गे! उत्तिष्ठ उत्तिष्ठ, निद्रां जहि जहि प्रति-बुध्यस्व प्रति-बुध्यस्व, मम शत्रुन् हन हन, पातय-पातय, स्वाहा'** से **बोधन** कर, हरिद्रा-मिश्रित सुगन्ध-तैल **उद्वर्तन-मन्त्र** पढ़कर **देवी के अङ्ग** अथवा **खड्ग में लेपन** करे। फिर **'ॐ नाना-गन्ध-सुगन्धाढ्यं'** इत्यादि श्लोक पढ़, **पञ्च-सुगन्ध लेपन** कर, **मूल-मन्त्र** से **बिल्व-पत्र, जपा-पुष्प, रक्त-करवीर, पाटली-पुष्प** तथा **द्रोण-पुष्प** देवी के मस्तक में समर्पित कर, चारों दिशाओं में क्रमशः **बटुकादि** को

माष-भक्त-प्रदान करे। तत् पश्चात् यथा-शक्ति **जप-पाठ** कर, एक मन्त्र पढ़, उस **करवाल** में अथवा **प्रतिमा** है, तो **देवी के वाम-कर** में, **कुमारी-सूत्र** वेष्ठित करे। **रक्षा-मन्त्र** पढ़, **सर्षप** से आठों दिशाओं में रक्षा कर, **देवी के आठों ओर आठ दीपक** जलाकर, एक **छोटी-सी प्रार्थना** कर, यथा-लाभ **तत्त्व-शुद्धि** कर **गीत-वाद्यादि** से देवी को प्रसन्न करे।

दशमी से **अमा** तक **मध्याह्न** में **उग्र-चण्डा** की सामान्य पद्धति से प्रति-दिन पश्चिमाम्नाय के कुल-कल्प से पूजा करे।

आश्विन शुक्ल-प्रतिपत्-कृत्य

स्नान-सन्ध्यादि नित्य-कर्म कर, पूजा-मण्डप में प्रवेश कर, श्रीविद्या-मूल से ऋष्यादि कर, षडङ्ग-न्यास कर, यवाक्षत-तिल-कुश-जल हाथ में लेकर, **'सङ्कल्प'** करे—

'ॐ अद्येत्यादि अमुकार्थे शारदीयार्चन-निमित्त्यर्थे घट-स्थापन-कर्माहं करिष्ये।'

तत्पश्चात् ऊर्ध्वाम्नायोक्त क्रम से **सामान्यार्घ्य-स्थापन** करे। उस जल से एक मन्त्र पढ़, **भूमि-वेदी का सिञ्चन** करे। फिर एक मन्त्र पढ़, कुश से **भूमि का स्पर्श** कर, उसे शुद्ध करे। तब सिन्दूरादि रज से **चतुरस्रात्मक सर्वतो - भद्र** लिखकर, एक मन्त्र पढ़, गन्धोक्त कुसुमाक्षत से **पूजा** कर, दूसरा मन्त्र पढ़, **पङ्क से आच्छादन** कर, **त्रिकोणाकार** बनाकर, तीसरा मन्त्र पढ़े, सिन्दूर से उसके ऊपर **अर्द्ध-चन्द्राकार** लिखे। तत्पश्चात् यवों का यथोक्त विधि से शोधन तथा **'ॐ यव त्वमसि०'** इत्यादि प्रार्थना कर, चतुर्थ मन्त्र पढ़, उसके ऊपर **यवार्पण** करे। फिर **'ॐ पङ्क! त्वं पृथि-रूपो०'** इत्यादि पढ़, **पङ्क से आच्छादन** कर, **जल-सिञ्चन** कर, उसके ऊपर **विन्दु-नव-योनि-केशरान्विताष्टदल-चतुरस्र** लिखकर, उसमें **पञ्चाशत् पीठों की पूजा** करे।

तत्-पश्चात् उसके ऊपर साधारण **घट-स्थापन** कर, उसके ऊपर, **अलि-पूर्ण पात्र** तथा **महा-फल-स्थापन** कर, उसमें **सावयव महा-त्रिपुर-सुन्दरी की भावना** करे। फिर सु-वेला में उसे स्थिर करे। तत्-पश्चात् **भूत-शुद्धि** और **प्राणायाम**-पूर्वक प्रथम **गण-षोढा-न्यास** कर, **त्रिपुरा के मन्त्र का ऋष्यादि-षडङ्ग-न्यास** कर, ऊर्ध्वाम्नाय से **दीप, कलश** तथा **गणेश का स्थापन** और **पूजन** करे। हो सके, तो **शालिग्राम-गणेश** या **शोणभद्र-गणेश** का और न हो सके, तो केवल **पूगी-फल में गणपति का आवाहन तथा पूजन** करे, **मूर्ति** में नहीं क्योंकि अवस्थानुसार **नाम, ध्यान** तथा **मन्त्रों के भेद से पूजा** होगी। **प्रातः-पूजा में नवों दिन महा-गणपति पूज्य** हैं। तत्पश्चात् ऊर्ध्वाम्नाय-विधि से **पात्रादि का स्थापन** तथा संस्कार कर, मूल घट में **मण्डूकादि पर-तत्त्वान्त पीठ-देवताओं की पूजा कर, 'लं त्रैलोक्य-मोहन-चतुरस्र चक्राय नमः'** से विशेष **'पीठ-पूजा'** करे। इसके बाद **'त्रिखण्डा-मुद्रा'** से **त्रिपुरा का ध्यान** कर—

ॐ आगच्छ वरदे, देवि! दैत्य-दर्प-निसूदिनि!
पूजां गृहाण सुमुखि! त्रिपुरे, शङ्कर-प्रिये!॥

इस श्लोक से आवाहन कर—

ॐ इमां प्रसाधिनीं देवि! रम्य-पट्टैर्विनिर्मिताम्।
गृहाण त्रिपुरे, मातः! केश-सुस्निग्ध-कारिणीम्॥

इस श्लोक से **केश-संस्कार-द्रव्य** समर्पण कर, **त्रिपुरा के मन्त्र** से **पाद्यार्घ्यादि** समर्पित करे। तब स्नान कराने के बाद पीत-वस्त्र, पीत-यज्ञोपवीत, गोरोचन, चन्दन, सिन्दूराक्षतादि, चम्पक-पुष्प, मन्दार-पुष्प-माला, वाल-धूप, पीत-वर्तिका-दीप, घृतोदन-नैवेद्य, पूरक-पक्वान्न, अग्नि-पक्व-मांस,

शल्लकी-मांस चिञ्चिणी-रस-पात्र, उष्णौषधि, शाली - धान्य - व्रीहि, ताम्बूल-मुख-शुद्धि तथा हिरण्य-दक्षिणा **त्रिपुरा-मूल से समर्पित** कर, **त्रिपुरा की पादुका-पूजा** कर, दक्ष में **अणिमा-सिद्धि,** वाम में **सर्व-संक्षोभिणी-मुद्रा,** अग्र में **चार्वाक-दर्शन** तथा पृष्ठ में **पृथिव्यात्मक चक्र** की पूजा कर, **अणिमादि प्रकट-योगिनियों की आवरण-पूजा** कर, बलि-पात्र में **बटुक-बलि** करे। इसके बाद **जप-पाठादि** कर, **एक-वर्षात्मिका कन्या** की **'श्रद्धा'**-संज्ञा से पूजा कर, **'हल्लेखा'** नाम से **सुवासिनी की पूजा** कर, **तत्त्व-शुद्धि** करे। तत्पश्चात् निम्न मन्त्र से लाजाक्षत समर्पण करे—

'ॐ कृतैतच्छारदीय-प्रतिपदि प्रातस्त्रैलोक्य-मोहन-चक्राधिष्ठात्री-श्रीत्रिपुरार्चन-विधौ तत्सर्वं कर्म परिपूर्णमस्तु। मां मदीयं सकलं परार्पणमस्तु।।'

इस प्रकार **प्रातः-पूजा** समाप्त करे।

अब **मध्याह्न** में **माध्याह्निक सन्ध्यादि** समाप्त कर **सङ्कल्प** करे—

'ॐ अद्येत्यादि अमुकार्थे अद्यारभ्य नवम्यन्तं मध्याह्ने यथा-शक्ति-कुलाचारेण श्रीमन्महोग्र-चण्डाङ्ग-भूत नव-दुर्गा-क्रमार्चनमहं करिष्ये।'

उग्रचण्डा-मूल का **कर-षडङ्ग-न्यास** कर, पश्चिमाम्नायोक्त विधि से **प्रातः स्थापित दीप-कलश में गणेश की पूजा** करे। अब गणेश का **'कुल-गणपति'** रूप होगा। तत्पश्चात् **मूल-घट** के ऊपर अथवा वाम ओर घट को स्पर्श कर, पूर्व-प्रबोधित **करवाल या मूर्ति का स्थापन** कर, **'एहि दुर्गे०'** इत्यादि से आवाहन कर, संक्षिप्त विधि से **उग्र-चण्डा की पूजा** कर, **कर-कच्छपी मुद्रा** से **रुद्र-चण्डा का ध्यान-पूर्वक आवाहन** करे। तत्पश्चात् **रुद्र-चण्डा की पूजा** करे। **रुद्र-चण्डा** के मन्त्र से **पाद्यादि वस्त्र-चन्दन, सिन्दूराक्षत** समर्पण कर, दमन पुष्प, कुंकुम-धूप, घृत-वर्तिका-दीप, सु-पोषक पक्वान्न, वराह-मांस, यव-व्रीही, मरीच औषधि, ताम्बूल मुख-शुद्धि तथा हिरण्य-दक्षिणा समर्पित करे। इसके बाद उनकी आवरण-पूजा कर, धूप-दीप तथा **पञ्च-तत्त्व-युक्त नैवेद्य** समर्पित कर, **मूल-देवी** तथा **बटुकादि** को **कृच्छ्रान्न बलि** देकर, **छाग** तथा **कूष्माण्ड की बलि** कर, पूर्व-वत् **सुवासिनी-पूजा** तथा **तत्त्व-शुद्धि** कर, निम्न मन्त्र से पूर्व-वत् पूजा समाप्त करे—

'ॐ कृतैतच्छारदीय - प्रतिपदि - मध्याह्ने श्रीमन्महोग्र - चण्डाङ्ग - भूत-रुद्र-चण्डा-पूजन-विधौ तत्सर्वं कर्म परिपूर्णमस्तु। मां मदीयं सकलं परार्पणमस्तु।'

अब **सायं**-काल में **सायं-सन्ध्यादि** समाप्त कर **सङ्कल्प** करे—

'ॐ अद्येत्यादि अमुकार्थे अद्यारभ्य नवम्यन्तं सायाह्ने यथा - शक्ति - कुलाचारेण प्रति - दिनं एकैकाम्नाय-क्रमेण क्रमार्चनमहं करिष्ये।'

दक्षिणाम्नायोक्त विधि से **दीप-कलश** तथा **लक्ष्मी-गणपति की पूजा** कर, **काली के द्वा-विंशाक्षर मन्त्र का ऋष्यादि** कर, **षडङ्ग-न्यास** कर, **मूल-घट में भगवती का आवाहन** करे—

ॐ दक्षिणे कालिके मातर्दक्ष-सिंहासनेश्वरि!
अस्मिन् घटे समायाहि, शारदी-प्रतिपत्-तिथौ।।
सायाह्ने मत्-कृतां पूजां, गृहीत्वा परमेश्वरि!
प्रीता भव महा-देवि! भुक्ति-मुक्ति-प्रदायिनि!।।

इस प्रकार आवाहन कर, **द्वा-विंशाक्षरी महा-विद्या** द्वारा **कुलाचार** से **महा-काल-भैरव-सहित साङ्गावरण दक्षिणा-काली की बलि-सहित पूजा-जप-पाठादि** कर, पूर्व-वत् **सुवासिनी-पूजा** तथा **तत्त्व-शुद्धि** कर अर्चन पूर्ण करे—**'ॐ कृतैतच्छारदीय - प्रतिपत् - सायाह्ने क्रमार्चने दक्षिणाम्नायेश्वरी-श्रीमद्-दक्षिण-कालिकार्चन-विधौ'** इत्यादि।

यदि हो सके, तो **त्रिकाल,** नहीं तो **मध्याह्न** तथा **सायं** द्वि-काल और यदि इतना भी न हो सके, तो **मध्याह्न** अथवा **सायं** में एक ही काल, प्रत्येक मन्त्र से **१६/१६ आहुतियाँ** छाग-कबन्ध मांस के टुकड़े के साथ धान्य-यव-तिलाक्षताज्य से **हवन** कर छाग-हृदय द्वारा **'ॐ मूर्धानं दिवो०'** इत्यादि ऋचा से **पूर्णाहुति** प्रदान करे।

अन्य दिनों की विधि भी ऐसी ही है, परन्तु **गणपति** का नाम, रूप, मन्त्र और पूजा के सामान तथा देवता पृथक् हैं! वे सब यहाँ लिखता हूँ।

द्वितीया-कृत्य

प्रातः सब कर्म पूर्व-वत् कर **द्वितीय गण-षोढा-न्यास** करे। यहाँ **महा-गण-पति की पूजा** होगी। **सर्वाशा-परिपूरक षोडश-दल-चक्र की भावना** कर, **त्रिपुरेशी का न्यास** व **ध्यान** कर निम्न मन्त्र से **आवाहन** करे—

ॐ सर्व-तीर्थ-मयं वारि, सर्व-वेद-समन्वितम्।
इदं घटं समासाद्य, तिष्ठ श्रीत्रिपुरेश्वरि!।।

त्रिपुरेशी-मन्त्र से पाद्यादि, श्वेत-वस्त्र, श्वेत-यज्ञोपवीत, श्रीखण्ड-चन्दन, वक-पुष्प, जयन्ती-पुष्प-माला, कर्पूर-धूप, सीत-वर्तिका-दीप, यवोदन-नैवेद्य, क्षीर-षष्ठिका-पक्कान्न, तित्तिरी-मांस, घृत-पात्र, श्री-फल, चर्म-धातु, सूक्ष्मेल-औषधि, मुदग्-ब्रीहि, द्राक्षा-मुख-शुद्धि तथा मुक्ता-दक्षिणा समर्पण कर, सीमन्तिनी, पक्व-सुगन्ध-तैल तथा केश-बन्धन-सूत्र प्रदान कर, मध्य में **त्रिपुरेशी,** दक्ष में **लघिमा-सिद्धि,** वाम में **सर्व-विद्राविणी-मुद्रा,** अग्र में **बौद्ध-दर्शन** तथा पृष्ठ में **चन्द्रात्मक चक्र** की पूजा कर, **कामाकर्षिण्यादि गुप्त-योगिनियों** की आवरण पूजा कर, **योगिनी-बलि** देकर, जप-पाठादि कर, **द्वि-वर्षात्मिका कन्या** की **'बाला'**-संज्ञा से तथा **सुवासिनी** की **'गगना'** नाम से **पूजा** कर, पूर्व-वत् पूजा समाप्त करे—**'ॐ कृतैतच्छारदीय-द्वितीयायां प्रातः सर्वाशा-परिपूरक- चक्राधिष्ठात्री-श्रीत्रिपुरेश्यर्चन-विधौ'** इत्यादि।

मध्याह्न में सकल कर्म पूर्व-वत् कर, **कुल-गणपति** की पूजा करे। **प्रचण्डा** का ध्यान तथा आवाहन कर, पाद्यादि, जयन्ती - पुष्प, अगरु - धूप, घृत - वर्तिका-दीप, क्षीर-पक्कान्न, वराह - मांस, धान्य - व्रीहि, सूक्ष्मेल औषधि, ताम्बूल-मुख-शुद्धि तथा रजत-दक्षिणा से अर्चन कर, पूर्व - वत् **छाग** तथा **कूष्माण्ड - बलि** भी पूर्व - वत् देकर **पूजा** समाप्त करे— **'ॐ कृतैतच्छारदीय-द्वितीया-मध्याह्ने श्रीमन्महोग्र-चण्डाङ्ग-भूत-प्रचण्डा-विधौ'** इत्यादि।

सायाह्न में सकल कर्म पूर्व-वत् कर **'गों'** मन्त्र से **गणपति की पूजा** कर अधराम्नाय से **श्रीमन्महोग्र-तारा** का न्यासादि कर आवाहन करे—

महोग्रे तारिणि मातः! पातालाम्नाय-नायिके!
सायाह्नेऽद्य द्वितीयायां, घट-मध्ये स्थिरा भव।।
प्रीता भव महा-देवि! पूजां तुभ्यं करोम्यहम्।।

उग्र-तारा की **षोडशाक्षरी महा-विद्या** द्वारा **अक्षोभ्य**-सहित साङ्गावरण **महोग्र-तारा** का बलि-सहित **कुलाचर से पूजन** कर, अन्य-विधि पूर्व-वत् कर पूजा समाप्त करे— **'कृतैतच्छारदीय-द्वितीया-सायाह्ने क्रमार्चने अधराम्नायेश्वरी-श्रीमन्महोग्र-तारार्चन-विधौ'** इत्यादि।

'ऊर्ध्वे सायुज्यमाप्नुयात्'-प्रति-दिन ऊर्ध्वाम्नाय से प्रातः-काल, **'पश्चिमं त्वैहिकं फलम्'**— पश्चिमाम्नाय से मध्याह्न में, फिर—

चतुराम्नाय - विज्ञानादूर्ध्वाम्नाय - परः प्रिये!
तस्मात् तदेव जानीयाद्, यदीच्छेत् सिद्धिमात्मनः।।

अभीष्ट-सिद्धि-हेतु सायं में पृथक्-पृथक् आम्नाय से पूजा होती है।

तृतीया-कृत्य

प्रातः सब कर्म पूर्व-वत् कर **तृतीय गण-षोढा-न्यास** कर **घट में सर्व-संक्षोभण-अष्ट-दल-चक्र की भावना** कर **त्रिपुर-सुन्दरी का न्यास-ध्यान** कर—

ॐ त्रिपुरे सुन्दरि! घटे, सान्निध्यमिह कल्पय।
इमां पूजां गृहाण त्वमष्टाभिः शक्तिभिः सह।।

उक्त मन्त्र से आवाहन कर **त्रिपुर-सुन्दरी** के मूल-मन्त्र से पाद्यादि, अरुण वस्त्र, अरुण यज्ञोपवीत, रक्त-चन्दन, कुरवक पुष्प, रक्त-कमल-माला, कृष्णागरु-धूप, रक्त-वर्तिका-दीप, रक्तोदन-नैवेद्य, इड-पक्वान्न, खड्गी-मांस, जम्बीर-रस-पात्र, दाडिम्ब-फल, अस्थि-धातु, यपानिका-औषधि, रायिका-व्रीहि, लवङ्ग-मुख-शुद्धि तथा स्फटिक-दक्षिणा समर्पित कर दर्पण, सिन्दूर तथा अलक्तक प्रदान कर मध्य में **त्रिपुर-सुन्दरी,** दक्ष में **महिमा-सिद्धि,** वाम में **सर्वाकर्षिणी-मुद्रा,** अग्र में **गाणपत्य-दर्शन** तथा पृष्ठ में **व्योमात्मक चक्र** की पूजा कर **अनङ्ग-कुसुमादि गुप्त-तर योगिनियों** की आवरण-पूजा कर **भूत-बलि** देकर सभी कर्म पूर्व-वत् करे। **त्रि-वर्षात्मिका कन्या** की **'ललिता'**-संज्ञा सें तथा **सुवासिनी** की **'रक्ता'**-संज्ञा से पूजा कर पूर्व - वत् **पूजा** समाप्त करे— **'ॐ कृतैतच्छारदीय-तृतीया-प्रातः श्रीत्रिपुर-सुन्दरी- पूजा-विधौ०'** इत्यादि।

मध्याह्न में सकल कर्म पूर्व-वत् कर **चण्डोग्रा का ध्यान** तथा **आवाहन** कर पाद्यादि, चम्पक-पुष्प, बाल-धूप, धृत-दीप, लड्डू-पक्वान्न, वराह-मांस, मांस-व्रीहि, लवङ्ग-औषधि, ताम्बूल-मुख-शुद्धि तथा ताम्र-दक्षिणा समर्पित कर **छाग** और **कूष्माण्ड-बलि** देकर सभी कर्म पूर्व-वत् समाप्त करे।

सायं-काल में सकल कर्म-पूर्व-वत् कर **महा-गणपति की पूजा** करे। ऊर्ध्वाम्नाय से **श्रीमद्-बाला-त्रिपुर-सुन्दरी** का न्यास-ध्यान कर—

ॐ ऊर्ध्वाम्नाय-समाराध्ये, श्रीबाला-त्रिपुरेश्वरि!
घट - मध्ये समायाहि, सायाह्ने पूजयाम्यहम्।।

उक्त मन्त्र से आवाहन कर **बाला त्रिपुर-सुन्दरी** की **षडक्षरी महा-विद्या** से **त्रिपुरेश्वर**-सहित **साङ्गावरण बाला-त्रिपुर-सुन्दरी की पूजा** कर पूर्व-वत् समाप्त करे।

चतुर्थी-कृत्य

प्रातः सब कर्म पूर्व - वत् कर **चतुर्थ गण-षोढा-न्यास** कर घट में **सर्व-सौभाग्य-दायक चतुर्दशार-चक्र की भावना** कर **त्रिपुर-वासिनी का न्यास** तथा **ध्यान** कर—

ॐ आगच्छागच्छ देवेशि! त्रिपुर-वासिनीश्वरि!
सान्निध्यं कुरु कुम्भेन, पूजां तुभ्यं करोम्यहम्।।

उक्त मन्त्र से आवाहन कर **त्रिपुर-वासिनी** के मन्त्र से पाद्यादि, हरित-वस्त्र, हरित-यज्ञोपवीत, चतुष्प-चन्दन, मारुत-पुष्प-माला, यक्ष-कर्दम-धूप, हरित-वर्तिका-दीप, पायसान्न-नैवेद्य, घृत-पूरक-पक्वान्न, हरिण-मांस, सुगन्ध-रस-पात्र, निम्बू-फल, स्नायु-धातु, शुण्ठी-औषधि, काल-मास-व्रीहि, खर्जूर-मुख-शुद्धि तथा मरकत-दक्षिणा समर्पित कर अञ्जन प्रदान कर दक्ष, वाम, अग्र तथा पृष्ठ में **ईशित्व-सिद्धि, सर्व-वशङ्करी मुद्रा, सांख्यादि दर्शन** तथा **मायात्मक चक्र** की पूजा कर **सर्व-संक्षोभिण्यादि सम्प्रदाय-योगिनियों** की पूजा कर **वटुक-क्षेत्रपाल** को बलि देकर **चतुर्वर्षात्मिका कन्या** की **'मालिनी'**-संज्ञा से तथा **सुवासिनी** की **'महोच्छूष्मा'** संज्ञा से पूजा कर पूर्व-वत् समाप्त करे।

मध्याह्न में सब पूर्व-वत् कर **चण्ड-नायिका का ध्यान** तथा **आवाहन** कर पाद्यादि, बिल्व-पत्र-पुष्प, अगर-धूप, घृत-दीप, मध्वोदन-नैवेद्य, वराह-मांस, कुरण्ट-व्रीहि, यष्टि-मधु-औषधि, ताम्बूल-मुख-शुद्धि तथा माणिक्य-दक्षिणा समर्पित कर **छाग** और **कूष्माण्ड की बलि** देकर पूर्व-वत् समाप्त करे।

सायं-काल में सकल कर्म पूर्व-वत् कर **'गणानां त्वा'** इत्यादि वैदिक मन्त्र से **गण-पति की पूजा** कर ऊर्ध्वाम्नाय से **वेद-माता ब्रह्म-गायत्री का न्यास-ध्यान** कर—

ॐ चतुर्थ्यां वेद-जननि, ब्रह्म-विद्या-स्वरूपिणि!

घट - मध्ये समायाहि, गायत्रि! पूजयामि ते।।

उक्त मन्त्र से आवाहन कर साधारण पूजा कर पूर्व-वत् समाप्त करे।

पञ्चमी-कृत्य

प्रातः सब कर्म पूर्व-वत् कर **पञ्चम गण-षोढा-न्यास** कर **घट में सर्वार्थ-साधक बहिर्दशार-चक्र की भावना** कर **त्रिपुरा-श्री** का **न्यास** तथा **ध्यान** कर—

ॐ आगच्छ वरदे देवि, त्रिपुरे! श्रीपरेश्वरि!

घट - मध्ये समायाहि, पूजये शारदीयकम्।।

उक्त मन्त्र से आवाहन कर पाद्यादि, रक्त-वस्त्र, रक्त-यज्ञोपवीत, कुंकुम-चन्दन, कुरण्टक-पुष्प, कुन्द-पुष्प-माला, शोह्ल-धूप, रक्त-वर्तिका-दीप, मुद्गोदन-नैवेद्य, फेन-पक्वान्न, मत्स्य, काञ्जीक-रस-पात्र, साखोट-फल, मेद्र-धातु, मांस-व्रीहि, कुष्टौषधि, पिप्पली-मुख- शुद्धि तथा प्रवाल-दक्षिणा समर्पित कर दक्ष, वाम, अग्र और पृष्ठ में **वशित्व-सिद्धि, सर्वोन्मादिनी-मुद्रा, वैदिक दर्शन** तथा **वाग्वात्मक चक्र** की पूजा कर **सर्व-सिद्धि-प्रदादि कुल-कौल-योगिनियों** की पूजा कर **क्षेत्र-पाल** को बलि देकर **पञ्च-वर्षात्मिका कन्या** की **'वसुन्धरा'** संज्ञा से तथा **'करालिनी'** नाम से **सुवासिनी** की पूजा कर पूर्व-वत् समाप्त करे।

मध्याह्न में सब कर्म पूर्व-वत् कर **चण्डा का ध्यान** तथा **आवाहन** कर पाद्यादि, वकुल-पुष्प, कर्पूर-धूप, घृत-दीप, दध्योदन-पक्वान्न, वाराह-मांस, श्वेत-सर्षप-व्रीहि, सूक्ष्मेलौषधि, ताम्बूल-मुख-शुद्धि तथा स्फटिक-दक्षिणा समर्पित कर **छाग** और **कूष्माण्ड** की बलि देकर पूर्व-वत् समाप्त करे।

सायं-काल सब कर्म पूर्व-वत् कर **उच्छिष्ट-गणपति की पूजा** करे। उत्तराम्नाय से **दशानना श्रीमद्-गुह्य-काली की भरतोपासिता महा-विद्या के न्यासादि** तथा **ध्यान** कर—

ॐ उत्तराम्नाय-सम्पूज्ये, श्रीमत्-सिद्धि-करालिके!

घट-मध्ये समायाहि, तिष्ठ श्रीगुह्य-कालिके!।।

पञ्चम्यामद्य देवि! त्वां, सायाह्ने पूजयाम्यहम्।।

उक्त मन्त्र से आवाहन कर **गुह्येश्वर**-सहित **सावरण-पूजा** कर पूर्व-वत् समाप्त करे।

षष्ठी-कृत्य

प्रातः-काल सब कर्म पूर्व-वत् कर **षष्ठम गण-षोढा-न्यास** कर **सर्व-रक्षा-करान्तर्दशार-चक्र की भावना** कर **त्रिपुरा-मालिनी का न्यास-ध्यान** कर—

ॐ त्रिपुरा-मालिनि परे, षष्ठिके ब्रह्म-रूपिणे!

आगच्छागच्छ वरदे! पूजां तुभ्यं करोम्यहम्।।

उक्त मन्त्र से आवाहन कर पाद्यादि, कुंकुमाभ-वस्त्र, कुंकुमाभ-यज्ञोपवीत, गोरोचन-चन्दन, रूप-केशर-पुष्प, विचित्र-पुष्प-माला, वाल-धूप, कुंकुमाभ-वर्तिका-दीप, दध्योदन-नैवेद्य, लड्डू-पक्वान्न, शल्लकी-मांस, मधु-पात्र, आम्र-फल, गोर्द-धातु, कलाप-व्रीहि, वंश-रोचन-

औषधि, यष्टि-मधु-मुख-शुद्धि तथा शङ्ख-दक्षिणा समर्पित कर मुक्ता, प्रवाल, वज्र तथा नील-मणि से सुशोभित सुवर्ण के अलङ्कार (कुण्डल तथा कण्ठ-माला) प्रदान करे। दक्ष, वाम, अग्र तथा पृष्ठ में **प्राकाम्य-सिद्धि, महांकुश-मुद्रा, सौर-दर्शन** तथा **तेजसात्मक चक्र** की पूजा कर **सर्वज्ञाद्या-निगर्भ-योगिनियों** की आवरण-पूजा करे। फिर **राज-राजेश्वर क्षेत्रपाल** को **बलि** देकर **षड्-वर्षात्मिका कन्या** की **'सरस्वती'**-संज्ञा से तथा **सुवासिनी** की **'इच्छा'**-संज्ञा से पूजा कर पूर्व-वत् समाप्त करे।

मध्याह्न में सब कर्म पूर्व-वत् कर **'चण्डवती'** के **न्यास** तथा **ध्यान** कर पाद्यादि, काश-पुष्प, गुग्गुल धूप, घृत-दीप, पूख-पक्वान्न, वराह-मांस, येपानिका-व्रीहि, जातीफल-औषधि, ताम्बूल-मुख-शुद्धि तथा मुक्ता-दक्षिणा समर्पित कर **छाग** तथा **कूष्माण्ड की बलि** देकर पूर्व-वत् समाप्त करे।

सायं-काल में सब पूर्व-वत् कर **विरञ्चि-गणपति** की पूजा कर पूर्वाम्नाय से **'भुवनेश्वरी'** की **पञ्चाक्षरी महा-विद्या के न्यास** और **ध्यान** कर—

ॐ भुवनेश्वरि, भो मातः! पूर्व-सिंहासनेश्वरि!
षष्ठ्यां सायाह्न-कालेऽस्मिन्, पूजां तुभ्यं करोम्यहम्।।
घट-मध्ये समायाहि, मूल-प्रकृति-रूपिणि!।।

इस मन्त्र से आवाहन कर **सदा-शिव** के सहित साङ्गावरण-पूजा कर पूर्व-वत् समाप्त करे।

मूल नक्षत्र— षष्ठी, सप्तमी अथवा **अष्टमी** जिस तिथि में हो, उस तिथि की **प्रातः-पूजा** के **आवरण-पूजन** के पश्चात् **मूर्ति** अथवा **यन्त्र** लिखकर **मूल कलश के वाम भाग में शारदा का आवाहन कर साङ्गावरण पूजा** करे।

सप्तमी-कृत्य

प्रातः सब कर्म पूर्व-वत् कर **सप्तम गण-षोढा-न्यास** कर **घट में सर्व-रोग-हर-अष्टार चक्र की भावना** कर **त्रिपुरा-सिद्धा** का **न्यास-ध्यान** कर—

आगच्छ त्रिपुरा-सिद्धे! वशिन्याद्य-समन्विते!
सर्व-रोग-हरे चक्रे, तिष्ठ त्वां पूजयाम्यहम्।।

इस मन्त्र से आवाहन कर पाद्यादि, रक्त-वस्त्र, रक्त-यज्ञोपवीत, रक्त-चन्दन, बन्धूक-पुष्प, जाति-पुष्प-माला, महा-धूप, रक्त-वर्तिका-दीप, रक्तोदन-नैवेद्य, मृग-मांस, रक्त-पात्र, कदली-फल, प्लीह-धातु, कुरंट-व्रीहि, वंश-रोचन-औषधि, पूग-मुख-शुद्धि तथा ताम्र-दक्षिणा समर्पित कर रत्न-खचित हिरण्य-पादुका प्रदान कर दक्ष, वाम, अग्र तथा पृष्ठ में **भुक्ति-सिद्धि, सर्व-खेचरी-मुद्रा, वैष्णव-दर्शन** तथा **कलात्मक चक्र** की पूजा कर **वशिन्यादि रहस्य-योगिनियों** की आवरण-पूजा कर **गणेश-बलि** देकर **सप्त-वर्षात्मिका कन्या** की **'रमा'** नाम से तथा **सुवासिनी** की **'ज्ञाना'** नाम से पूजा कर पूर्व-वत् समाप्त करे।

मध्याह्न में सब कर्म पूर्व-वत् कर **चण्ड**-रूप का न्यास-ध्यान कर पाद्यादि, नील-कमल-पुष्प, कुंकुम-धूप, घृत-दीप, घृत-पक्वान्न, यावक-व्रीहि, वंश-रोचन-औषधि, ताम्बूल-मुख-शुद्धि तथा सीस-दक्षिणा समर्पित कर **छाग** तथा **कूष्माण्ड की बलि** देकर पूर्व-वत् समाप्त करे। **अपराह्न** में **नव-पत्रिका** (१ कदली, २ दाडिमी, ३ धान्य, ४ हरिद्रा, ५ मानक, ६ कचि, ७ बिल्व, ८ अशोक तथा ९ जयन्ती) का **जय-दुर्गा-मन्त्र** से प्रोक्षण तथा पूजन कर मूल घट के ऊपर स्थापित करे। तब **कर्म-कुञ्जिका की पूजा** करे।

सायं में सर्व-प्रथम **'ॐ अद्येत्यादि अमुकार्थे स्व-कर्तव्य-शारदीयार्चन-महा-स्नानाङ्ग-भूतमधिवासन-कर्माहं करिष्ये।'** यह सङ्कल्प कर मूल घट के निकट, वाम ओर, माणिक्य, मरकत, पुष्प-राग अथवा स्फटिक में से किसी एक में अङ्कित **श्री-यन्त्र** की स्थापना कर यथोक्त विधि से **अधिवासन** करे। तत्पश्चात् सब कर्म पूर्व-वत् कर **'क्षिप्र-प्रसादन गणेश'** की पूजा कर उपाम्नाय से **नवार्ण-महा-विद्या** का **न्यास** कर **त्रि-शक्त्यात्मिका चामुण्डा का ध्यान** कर—

ॐ आरोपिताऽसि चामुण्डे! मृण्मये श्रीफलेऽपि च।
स्थिरी-भूत्वा तु सततं, गृहे त्वं कामदा भव॥

इस मन्त्र से आवाहन कर **'ॐ अद्येत्यादि अमुकार्थे नव-पत्रिका-पूजनमहं करिष्ये'** यह सङ्कल्प कर यथोक्त विधि से **प्राण-प्रतिष्ठा** कर निम्न मन्त्र से **प्रार्थना** करे—

(मूलं) **यज्ञ-भागान् गृहाण त्वं, सर्वाभिः शक्तिभिः सह।**
शारदीयामिमां पूजां, ग्रहीतुं तमिहागता।
स्वागतं ते महा-देवि! प्रणामं त्वं गृहाण मे॥

अब **नवार्ण** से पाद्यादि, चन्दनाक्षतादि, पुष्प-मालाएँ, द्रोण-पुष्प, बिल्व-पत्र समर्पित कर **षडङ्ग-मन्त्र** से पूजा करे। फिर शतानि अलङ्काराणि, सिन्दूर, शय्या, आसन, जल-पात्र, भोजन-भाजन, यथा-लाभ नैवेद्य, ताम्बूल तथा वस्त्र समर्पित कर **महा-भीषण-भैरव** के सहित आवरण-पूजा कर धूप, दीप तथा नैवेद्यादि समर्पित कर पूर्व-स्थापित **नव-पत्रिकाओं** में से प्रत्येक में **शक्ति की प्रार्थना** तथा **पूजा** करे। इसके बाद १ खड्ग, २ कटार, ३ छुरिका, ४ शक्ति, ५ कुन्त, ६ शूल, ७ परशु, ८ परिघ, ९ मुद्गर, १० पट्टीश, ११ भिन्दिपाल, १२ चर्म, १३ कवच, १४ धनुः तथा १५ वाण— **दुर्गा के इन १५ आयुधों की स्थापना** कर पञ्चोपचार से पूजा कर यथोक्त विधि से **ध्वजारोहण** कर **छत्र, चामर** तथा **घण्टा** समर्पित कर **छाग** तथा **कूष्माण्ड की बलि** देकर पूर्व-वत् समाप्त करे।

महाऽष्टमी-कृत्य

प्रातः स्नान-सन्ध्यादि नित्य-कर्म समाप्त कर **महा-षोडशी**-मूल का **ऋष्यादि** कर **षडङ्ग-न्यास** कर **'ॐ अद्येत्यादि अमुकार्थे श्रीमन्महा-राज-राजेश्वरी श्रीमन्महा-त्रिपुर-सुन्दरी-देव्या महा-स्नान-कर्माहं करिष्ये'** यह **सङ्कल्प** कर भू-मण्डल में सिन्दूर से **त्रिकोण** से **चतुर्दशार** तक यन्त्र लिखकर स्वाग्रादि दक्षिणावर्त्त से छोटे-छोटे **कलश** स्थापित कर नीचे लिखे हुए अमृतों से उन्हें पूर्ण करे।

चतुर्दशार में शुद्ध-जल, नदी-सङ्गमोदक, शङ्खोदक, गङ्गोदक, उष्णोदक, चतुस्मोदक, शीतलोदक, गो-मूत्र, गो-मय, गो-दधि, गो-दुग्ध, गो-घृत, पञ्च-गव्य तथा पञ्चामृत। **बहिर्दशार** में गो-दुग्ध, गो-दधि, मधु, गो-घृत, शर्करा, पुष्पोदक, कुशोदक, फलोदक, इक्षूदक तथा नारिकेलोदक। **अन्तर्दशार** में गज-दन्त-लग्न-मृत्तिका - जल, शूकर-दन्त-लग्न-मृत्तिका - जल, सुवर्णोदक, रत्नोदक, सर्वोषधि-मिश्रित - जल, सहस्र - धारा जल, कस्तूरी - हरिद्रा - मिश्रित-जल, कर्पूर-श्रीखण्ड-मिश्रित-जल, कुंकुमोदक तथा गोरोचनोदक। **अष्ट-कोण** में गङ्गा - जल, मेघ - निःसृतोदक, वाग्मती - जल, समुद्रोदक, पद्म - केशर-मिश्रितोदक, निर्झरोदक, तीर्थोदक, सरोवर-जल। **त्रिकोण-मध्य** में सुधा-पूर्ण कलश।

एवं स्थापित कर यथोक्त-विधि से संस्कार करे। तत्पश्चात् पूर्व-अधिवासित **श्रीयन्त्र** को प्रत्येक कलश से यथोक्त पृथक्-पृथक् मन्त्र पढ़ स्नान कराए। **अष्ट-कोण-स्थित कलशोदक** से स्नान

कराने के समय मन्त्र के साथ-साथ **गीत** तथा **वाद्य** भी आवश्यक हैं। यथा—

मालव-राग और **विजय-वाद्य** सहित **गङ्गा-जल** से। **ललित-राग** तथा **देव-वाद्य— मेघ-निःसृतोदक** से। **विभास-रास** तथा **दुन्दुभि-वाद्य— वाग्मती-जल** से। **भैरव-राग** तथा **अमर-वाद्य— समुद्रोदक** से। **केदारा-राग** व **इन्द्राद्यभिषेक-वाद्य— पद्म-रेणुदक** से। **वैराटी-राग** तथा **शङ्ख-वाद्य— निर्झरोदक** से। **वसन्त-राग** और **पञ्च-शब्द-वाद्य— तीर्थोदक** से। **धानुषी-राग** तथा **देव-विजय-वाद्य— सरोवर-जल** से। **भैरवी-राग** तथा **सर्व-विजय-वाद्य— सुधा-पूर्ण कलश** से।

तत्पश्चात् **सकल-कलशोदक** एक कर **'ॐ राज-राजेश्वरी शक्ति०'** इत्यादि अभिषेक-मन्त्रों से **स्नान** कराए। तत्पश्चात् **स्नान-मण्डल** का **विसर्जन** करे। तब **भूत-बलि** देकर उसे **विसर्जन** कर **भूतान्यपसारण** कर यथोक्त-विधि से **द्वार-पूजा** करे। तब एक मन्त्र पढ़ **श्रीयन्त्र का चालन** करे। फिर उस **श्रीयन्त्र** को **रक्त-वस्त्र से वेष्ठित** करे।

तत्पश्चात् पूर्व-दिन के प्रातः-वत् कर्म कर, **अष्टम गण-षोढा-न्यास** तथा **'महा-षोडशी'** का न्यासादि कर **'त्रिपुराम्बा'** का **ऋष्यादि** कर **षडङ्ग-न्यास** कर, देवी के वाम ओर **मोहिनी-स्थापन** कर, कज्जल-साधन कर मूल-देवी **श्रीमहा-षोडशी महा-त्रिपुर-सुन्दरी का पीठार्चन, ध्यान, आवाहन** तथा **प्राण-प्रतिष्ठा** कर, **षोडशोपचार से पूजा** कर उनके दक्ष में **महा-कामेश्वर की पूजा** कर **नव-मुद्राएँ** दिखाए। तत्-पश्चात् **घट में सर्व-सिद्धि-प्रद त्रिकोण-चक्र की भावना** कर **त्रिपुराम्बा का ध्यान** कर निम्न मन्त्र से आवाहन करे—

ॐ आगच्छ मद्-गृहे देवि! सह शक्तिभिरष्टभिः।
पूजां गृहाण विधि-वत्, सर्व-कल्याण-हेतवे।।

अब पाद्यादि, रक्त-वस्त्र, रक्त-यज्ञोपवीत, चतुष्म-चन्दन, जाति-पुष्प, कर्पूर-रस-माला, कृष्णागरु-धूप, रक्त-वर्त्तिका-दीप, क्षीरान्न-नैवेद्य, तैल-पूरक-पक्वान्न, यकृन्मांस, दुग्ध-रस-पात्र, कलिङ्ग फल, वसा-धातु, सित-सर्षप-व्रीहि, इक्षु-सृङ्गी औषधि, कर्पूरान्वित-ताम्बूल-मुख-शुद्धि तथा रजत-दक्षिणा समर्पित कर दक्ष, वाम, अग्र तथा पृष्ठ में **इच्छा-सिद्धि, सर्व-वीजा-मुद्रा, शाक्त-दर्शन, विश्व-नादात्मक चक्र की पूजा** कर **कामेश्वरादि षोडश नित्या कलाओं, गुरु-सन्तति, षडङ्ग-युवतियों, चतुरायुध-शक्तियों** तथा **महा-कामेश्वरादि अति-रहस्य-योगिनियों की आवरण-पूजा** करे। इसके बाद **१ खड्ग, २ छुरिका, ३ कटार, ४ पञ्च-वाण, ५ इक्षु-चाप, ६ कुन्त, ७ शूल, ८ चर्म, ९ पाश, १० अंकुश** तथा **११ तुला—श्री के इन ११ आयुधों** के स्व-स्व-वीज-मन्त्र से प्रत्येक की पूजा तथा प्रार्थना कर **बटुकादि** तथा पूजित सर्व-देवताओं को **बलि** प्रदान कर **अष्ट-वर्षात्मिका कन्या** की **'गौरी'**-संज्ञा से तथा **सुवासिनी** की **'क्रिया'**-संज्ञा से पूजा कर पूर्व-वत् समाप्त करे।

मध्याह्न में पूर्व-वत् कर्म कर **'अति-चण्डिका'** का **ध्यान-आवाहन** कर पाद्यादि, बन्धूक-पुष्प, अष्टाङ्ग - धूप, घृत - दीप, क्षीर-षष्ठिका-पक्वान्न, वराह - मांस, राजिका - व्रीहि, त्वगौषधि, ताम्बूल-मुख-शुद्धि तथा रजत-दक्षिणा समर्पित कर **छाग** तथा **कूष्माण्ड की बलि** देकर पूर्व-वत् समाप्त करे।

सायं-काल में पूर्व-वत् कर्म कर **विघ्न-गणपति की पूजा** कर **श्रीमन्महा-कुब्जिकेश्वरी** के **न्यास-ध्यानादि** कर निम्न मन्त्र से **आवाहन** करे—

ॐ ५ अवतीर्य क्रमान्तस्था, मण्डलोर्ध्वे तु पङ्कजे।
त्र्यस्रासन-समारूढां, सिद्ध-कूटेन संस्थिताम्।।

वक्त्रान्ते दूती-संयुक्तां, आयुधैः समलंकृताम्।
आराधये महा-देवीं, सर्वेषां सर्व-संस्थिताम्॥
या सा परापरा-शक्तिः, खगस्था ख - स्वरूपिणी।
सोम - सूर्य - पदान्तस्था, आयान्तु इह मण्डले॥
गृहाण मत्-कृतां पूजां, पश्चिमाम्नाय - नायिके!

अब **कुब्जिकेश्वर**-सहित साङ्गवरण-पूजा कर पूर्व-वत् समाप्त करे।

रात्रि में **भूत-शुद्धि** और **प्राणायाम** कर—**'ॐ अद्येत्यादि अमुकार्थे भगवत्याः श्रीमन्महोग्र-चण्डा दुर्गा-देव्याः महा-पूजाऽहं करिष्ये।'** यह सङ्कल्प कर **उग्रचण्डा**-कल्पोक्त विधि से **न्यासादि** तथा **दीप, कलश, कुल-गणपति-पूजादि** आवरण-पूजा तक समाप्त कर विल्व-पत्र, द्रोण-पुष्प, करवीर पुष्प, पद्म-माला, जपा-कुसुम-माला, कुमुद-पुष्प-माला तुलसी-पत्र-माला, विल्व-पत्र-माला, घृत-गुग्गुल-धूप, तैल - दीप, घृत - दीप, घृत-वृक्ष-दीप, गुड़-पचित-पक्वान्न, घृत-पचित-पक्वान्न, मोदक, पञ्च-तत्त्वान्वित-चर्वण-नैवेद्य, कदली - फल, नारिकेल-फल, पनश-फल, ताम्बूल, कोषकार, काष्ठ-पादुका, उपानह, अलङ्कार तथा सुवर्ण-दक्षिणा समर्पित कर **आनन्द-कलश** में ८ दिशाओं में **असिताङ्गादि अष्ट-भैरवों** की तथा मध्य में **आनन्द-भैरव** की पूजा कर **बटुकादि** तथा सकल पूजित देवताओं को **माष-भक्त की बलि** देकर यथोक्त विधि से **छाग-बलि** तथा **कूष्माण्ड-बलि,** फिर भैरवादि के लिए मेष-बलि करे। तब मण्डप के बाहर स्तम्भ के पास **महिष, छाग** तथा **कूष्माण्ड की बलि** कर **याग-मण्डप में पुनः प्रवेश** कर पूर्व-वत् प्रार्थना कर समाप्त करे।

नवमी-कृत्य

प्रातः-काल में सब कर्म पूर्व-वत् कर **नवम गण-षोढा-न्यास** कर घट में **सर्वानन्द-मय वैन्दव-चक्र की भावना** कर **'त्रिपुर-भैरवी'** का न्यास-ध्यान कर निम्न मन्त्र से आवाहन करे —

ॐ आगच्छ मद्-गृहे देवि! त्रिपुरे, भैरवीश्वरि!
गृहाण मत्-कृतां पूजां, नवम्यां परमेश्वरि!॥

अब पाद्यादि, रक्त-वस्त्र, रक्त-यज्ञोपवीत, अष्ट-सुगन्ध-चन्दन, सेफालिका-पुष्प, जपा-पुष्प-माला, कपि - धूप, रक्त - वर्तिका - दीप, मध्वोदन-नैवेद्य, लड्डू-पक्वान्न, छाग-मांस, शर्करा-रस-पात्र, बीजा-पूरक-फल, मांस-धातु, तिल-व्रीहि, हिंगु-औषधि, जाती-फल-मुख-शुद्धि तथा पृष्ठ में **प्राप्ति-सिद्धि, सर्व-योनि-मुद्रा, शैव-दर्शन** तथा **सम-रस-चक्र** की पूजा कर **रत्यादि परापर-योगिनियों** की आवरण-पूजा करे। तत्-पश्चात् **श्रीमहा-षोडशी का न्यासादि, ध्यान** तथा **पूजन** कर **कामेश्वर-सहित समस्त श्रीचक्रावरण की पूजा** कर **बटुकादि** तथा सभी पूजित देवताओं को **बलि** देकर **कुन्द-पुष्प** तथा रूप-केशर-पुष्प-माला समर्पित कर आसा-पूरि, गुग्गुल, शिह्ल, अगरु, कर्पूर, कस्तूरिका, कपि तथा घृत एकत्र कर धूप और घृत-दीप प्रदान कर पञ्च-तत्त्व के सहित **चर्वण नैवेद्य** समर्पित कर **नव-वर्षात्मिका कन्या** की **'दुर्गा'**-संज्ञा से पूजा करे। तत्पश्चात् **मूल-द्वार** से बाहर **आचार्य-द्वार** के मुख में बैठ-कर **भू-मण्डल में कुरु-कुल्लादि का विसर्जन** करे। ततः **सुवासिनी** की भी **'दुर्गा'**-नाम से पूजा कर पूर्व-वत् समाप्त करे।

मध्याह्न में सब कर्म पूर्व-वत् कर **'श्रीमन्महोग्र-चण्डा'** का **न्यास, ध्यान** तथा **आवाहन** कर पाद्यादि, मन्दार पुष्प, महा-धूप, सर्व-चरु-पक्वान्न, वराह-मांस, रूप-केशर-औषधि, सर्व-व्रीहि, ताम्बूल-मुख-शुद्धि तथा आयस-दक्षिणा समर्पित कर पूर्व-रात्रि-वत् सर्वावरण-पूजा कर बटुकादि तथा समस्त पूजित देवताओं को बलि प्रदान कर **छाग** तथा **कूष्माण्ड**

की बलि करे। फिर बहिः-स्तम्भ में पूर्व-रात्रि-वत् **महिषादि-बलि** कर सकल कर्म पूर्व-रात्रि-वत् समाप्त करे।

सायं-काल में सब कर्म पूर्व-वत् कर **महा-गणपति की पूजा** कर ऊर्ध्वाम्नाय से **श्रीविद्या-महा-षोडशी महा-त्रिपुर-सुन्दरी** का **न्यासादि** तथा **ध्यान** कर निम्न मन्त्र से आवाहन करे —

ॐ ११ महा-पद्म-वनान्तस्थे! कारणानन्द-विग्रहे!
सर्व - भूत - हिते मातरेह्येहि परमेश्वरि!॥

अब **महा-कामेश्वर-सहित श्रीमन्महा-त्रिपुर-सुन्दरी** की **समस्त श्रीचक्रावरणार्चन के साथ सपर्या** कर पूर्व-वत् समाप्त करे। **शिवा-बलि** भी करे।

दशमी-कृत्य

प्रातः-काल सब कर्म पूर्व-वत् कर **दशम गण-षोढा-न्यास** कर **श्रीविद्या-कल्पोक्त सकल न्यासादि** कर **दीप-कलश-महा-गणपति-पूजा** से **मूल-घट की पीठ-पूजा** तक समाप्त कर **'ॐ ४ कामेश्वराङ्क-सिद्धेश्वर-पीठाय नमः'** से विशेष पीठ-पूजा कर घट में मुक्ति-प्रद **महा-वैन्दव-चक्र की भावना** कर **पञ्च-दशी श्रीमन्महा-त्रिपुर-सुन्दरी का ध्यान** कर **'ॐ महा-पद्मेत्यादि'** से आवाहन कर षोडशोपचार से पूजा कर **समस्त श्रीचक्रावरण-पूजा** करे। ततः सकल स्थापित देवताओं को स्व-स्व-मन्त्र से **पुष्पाञ्जलि** प्रदान कर **वटुकादि को बलि** देकर **धूप-दीप-नैवेद्यादि** समर्पित कर—

ॐ रश्मि-रूपा-महा-देव्या, ह्यत्र पूजित - देवताः।
सुन्दर्यङ्गे विलीनास्ताः, सन्तु सर्वा शुभावहाः॥

इस मन्त्र से सकल पूजित देवताओं को **श्रीपीठ** (मूल-घट) में विलीन हुआ समझ कर **षोडश-वक्त्रा** (अष्टोत्तर-भुजा) **श्रीमन्निर्वाण-महा-त्रिपुर-सुन्दरी** का **ध्यान** कर, **श्रीविद्या की सर्वाधिकार-विद्या, निर्वाण-विद्या** के साथ **लघु-साम्राज्य-मेधा के दश-कूटा षोडशी मन्त्र** से साङ्ग सालङ्कारा उनकी यथा-शक्त्युपचार से पूजा कर, **मूल-सहस्राक्षरी विद्या** से **पुष्पाञ्जलि** समर्पण कर, **महा-वैन्दव-चक्र की तेजो-मय भावना** कर, **परा-पराति-रहस्य-योगिनी-स्वरूपिणी महा - त्रिपुर-सुन्दरी** के दक्ष, वाम, अग्र तथा पृष्ठ में **मोक्ष - सिद्धि, सर्व - त्रिखण्डा मुद्रा, कौल-दर्शन** तथा **कौलात्मक चक्र** की पूजा कर, **छाग** तथा **कूष्माण्ड की बलि** देकर, **लघु-साम्राज्य-मेधा की अलेखनी विद्या** का यथा-शक्ति **जप** कर, निवेदन कर, पद्धत्युक्त **स्तोत्र का पाठ** कर, यथा-विधि **विसर्जन** करे। **अपराजिता-पूजा** करे।

फिर **आश्विन शुक्ल त्रयोदशी** में **भूमण्डल-विसर्जन** करे।

'शारदीय महा-पूजा की प्राचीनता'

भगवान् रामचन्द्र को यह गौरव प्राप्त है कि उन्होंने अपने अनुष्ठान की महिमा से प्रति-वर्ष भक्तों के घर **जगदम्बा के पूजा-ग्रहण** की परिपाटी स्थापित कर दी।

ब्रह्मा ने **जगदम्बा का बोधन** करते हुए, उस समय जिस भाव-भरित, उदात्त और प्रशस्त स्तुति-मन्त्र का पाठ किया था, वह **'महा- भागवत पुराण'** में पठनीय है। तब से लेकर आज तक भक्त-समूह, **बिल्व**-वृक्ष के समीप अधिष्ठित होकर, प्रति-वर्ष अकाल में **जगदम्बा** को सप्रेम जगाता है। उसे त्रेता की उस स्मरणीय घटना का स्मरण कराकर, जागने की प्रेरणा देता है और जगाकर **श्री-चरणों** में अपना हार्दिक भक्ति-सम्भार उपस्थित कर अपने को धन्य और कृत-कृत्य बनाता है, सफल-मनोरथ होता है।

श्रीमद्-देवी-भागवत में शारदीय नवरात्र

❖ पण्डित रघुवीर मिश्र शास्त्री

शरत्-काल अर्थात् **आश्विन** के **'नव-रात्रि'** में विशेष-तया **भगवती श्रीजगदम्बा चण्डिका देवी का व्रत** करना चाहिए। इसी प्रकार **वसन्त ऋतु** के **'नव-रात्र'** में भी यह व्रत विधेय है। ये दोनों ही ऋतुएँ **'यम-दंष्ट्रा'** कही गई हैं क्योंकि इनमें विविध प्रकार के रोगादि उत्पन्न होते हैं और प्राणियों का व्यापक रूप से नाश होता है। अतएव **आत्म-कल्याण** की इच्छा करनेवाले व्यक्तियों को प्रयत्न-पूर्वक **'नव-रात्र' का व्रत** विधि-पूर्वक करना चाहिए। इस व्रत का प्रारम्भ **'शुक्ल प्रतिपदा'** से होता है। इसलिए इसकी तैयारी **अमावास्या** के दिन ही बुद्धिमान लोगों को कर लेनी चाहिए।

अमावास्या के दिन

व्रत से सम्बन्धित सभी वस्तुओं को पहले एकत्र करे। भोजन केवल एक बार करे और **हविष्य पदार्थों** को ही ग्रहण करे। अपने घर में या घर के निकट किसी सम-तल और पवित्र स्थान में सोलह हाथ लम्बा-चौड़ा **'मण्डप'** बनाए। इस **'मण्डप'** को सुन्दर स्तम्भों और पताकाओं से सजाए। सारे स्थान को श्वेत मिट्टी-गोबर से लिपवाए।

उक्त **'मण्डप'** के मध्य में एक सुन्दर, चौकोर और टिकाऊ **'वेदी'** बनाए। यह **'वेदी'** चार हाथ लम्बी-चौड़ी और एक हाथ ऊँची होनी चाहिए। इस **'वेदी'** या **'पीठ'** के ऊपर चाँदनी तनवाए और चारों ओर रङ्ग-बिरङ्गे **तोरण** बनाकर तथा **बन्दन-वार** लटका कर उसे शोभा-युक्त करे। रात्रि के समय ऐसे विद्वान् ब्राह्मणों को सादर बुलाए, जो **श्री जगदम्बा की उपासना के तत्त्व** को जानते हों और सदाचारी, संयमी तथा वेद-वेदाङ्गों के ज्ञाता हों।

प्रातः-काल नदी, नद, तड़ाग, बावली, कुँए पर जाकर अथवा घर में ही विधि-वत् स्नान करे। फिर **'नित्य-कर्म'** समाप्त कर अनुष्ठान करने के लिए **ब्राह्मणों का वरण** करे। **'मधु-पर्क'** और **'अर्घ्य-पाद्य'** से उनका पूजन कर उन्हें यथा-शक्ति वस्त्र तथा आभूषण भेंट कर सन्तुष्ट करे। इस कार्य में कञ्जूसी न करे क्योंकि सब प्रकार से सन्तुष्ट ब्राह्मणों के द्वारा किए गए पूजनादि कर्म ही फल-दायक होते हैं।

'श्रीमद्-देवी-भागवत्' और **'चण्डी-माहात्म्य'** (**श्रीदुर्गा-सप्तशती**) का पाठ करने के लिए यथा-सामर्थ्य **नौ, पाँच, तीन** अथवा **एक ब्राह्मण** की नियुक्ति करे। **'श्रीमद्-देवी-भागवत' का पारायण** करने के महत्-कार्य में किसी शान्त स्वभाववाले ब्राह्मण को नियुक्त करना चाहिए।

सबसे पहले वैदिक मन्त्रों से **'स्वस्त्ययन'** अर्थात् **मङ्गल-पाठ** कराए। तदनन्तर पूर्वोक्त **'वेदी'** के ऊपर एक **'सिंहासन'** स्थापित करे। **'सिंहासन'** में एक नवीन रेशमी वस्त्र बिछाए। इस वस्त्र के ऊपर **शङ्ख-चक्र-गदा-पद्म** से युक्त चार भुजाओंवाली अथवा विविध आयुधों से युक्त **अठारह भुजाओंवाली सनातनी भगवती की 'प्रतिमा'** को प्रतिष्ठित करे। देवी की यह **'प्रतिमा'** यथा-शक्ति रत्न-जटित आभूषणों, मोतियों के हार तथा सुन्दर वस्त्रों से शोभायमान होनी चाहिए। **'प्रतिमा'** की आकृति सौम्य और

शुभ लक्षणों से युक्त हो, इसका विशेष ध्यान रखना चाहिए।

यदि **'प्रतिमा'** की प्रतिष्ठा करना सम्भव न हो, तो उसके स्थान पर **नवार्ण-मन्त्र** से युक्त **'श्रीदुर्गा-यन्त्र'** की स्थापना करे।

'वेदी' के दाहिनी ओर एक **'कलश'** स्थापित करे। इस **'कलश'** को वैदिक मन्त्रों से अभिमन्त्रित कर उत्तम **तीर्थ-जल** से परिपूर्ण करे और जल में सुवर्ण तथा रत्न छोड़ दे। **'कलश'** को **'पञ्च-पल्लवों'** से शोभायमान करे। पूजा में लगनेवाली सभी सामग्रियों को **'वेदी'** के चारों ओर सजा कर रख ले। **मङ्गलाचार** के लिए **गायन-वादन** की व्यवस्था कर ले।

प्रतिपदा से पूजनारम्भ

हस्ति-नक्षत्र से युक्त **नन्दा (प्रतिपदा) तिथि** में विधि-वत् पूजा प्रारम्भ करना शुभ होता है। इस पूजा से सभी कामनाओं की पूर्ति होती है। सम्भव हो, तो इस दिन **उपवास** रखे अथवा केवल एक बार रात्रि में **हविष्य का भोजन** करे।

पूजन प्रारम्भ करने के पहले **देवी से प्रार्थना** करे। यथा—

करिष्यामि व्रतं मातर्नव - रात्रमुत्तमम्।
साहाय्यं कुरु मे देवि! जगदम्ब! ममाखिलम्॥

अर्थात् हे मातः! मैं नव-रात्र के उत्तम व्रत को करूँगा। हे देवि, हे जगदम्ब! मेरी पूर्ण सहायता करिए।

इसके बाद विधि-पूर्वक मन्त्रों का उच्चारण करते हुए **जगदम्बा का पूजन** करे। पूजन में **चन्दन-अगरु-कपूर; मन्दार-करञ्ज-अशोक-चम्पा-कनैल-मालती-ब्राह्मी** आदि के सुगन्धित **पुष्प** और **बिल्व-पत्र; धूप** तथा **दीप** का सविधि प्रयोग करे। **नारियल-नीबू-अनार-केला-नारङ्गी - कटहल - बिल्व** फलों के साथ अन्न प्रदान करे। मांसाहारी लोगों को **पशु-बलि** करनी चाहिए।

होम के लिए त्रिकोणाकार **'कुण्ड'** अथवा **'स्थण्डिल'** की रचना करे, जिसका प्रमाण (नाप) शुभ-दायक रखे।

प्रातः, मध्याह्न और **सायं**— तीनों काल पूजन करे और **गीत-वाद्य-नृत्य** द्वारा अधिक-से-अधिक उत्सव मनाए। प्रति-दिन **भूमि पर ही शयन** करे।

प्रति-दिन **'कुमारी'-पूजन** करे। चाहे तो केवल **एक कुमारी का नित्य पूजन** करे या प्रति-दिन एक-एक कर कुमारी की संख्या बढ़ाता जाए अर्थात् पहले दिन **एक कुमारी** का, दूसरे दिन **दो कुमारियों** का, तीसरे दिन **तीन** का— इसी प्रकार नवें दिन **नौ कुमारियों** की पूजा करे। अथवा **प्रति-दिन नौ कुमारियों का पूजन** करे। जैसी श्रद्धा और शक्ति हो, वैसा करे, किन्तु कञ्जूसी न करे।

ब्राह्मणों को ब्राह्मण-जाति की कन्या का कुमारी-रूप में पूजन करना चाहिए। क्षत्रिय को ब्राह्मण-क्षत्रिय दोनों जाति की कन्या का, वैश्य को ब्राह्मण-क्षत्रिय-वैश्य तीनों जातियों का और शूद्र को चारों जातियों की कन्या का कुमारी-रूप में पूजन करने का अधिकार है। विविध धन्धों में लगे हुए लोगों को अपनी ही जाति की कन्या का पूजन करना चाहिए।

ब्राह्मण-कन्या के पूजन से सब कार्यों की सिद्धि, **क्षत्रिय-कन्या** के पूजन से विजय-प्राप्ति, **वैश्य-कन्या** के पूजन से धन-लाभ और **शूद्र-कन्या** के पूजन से वंश-वृद्धि होती है।

कुमारियों के नाम और उनकी पूजा से प्राप्त होनेवाले फल का विवरण निम्न प्रकार है—

एक वर्ष— ''कुमारिका''

दुःख-दारिद्र्य- शत्रु-नाश, धन-आयु-बल-वृद्धि

तीन वर्ष— ''त्रि-मूर्ति''

धर्म-अर्थ-काम, धन-धान्य पुत्र-पौत्रादि-वृद्धि

चार वर्ष— ''कल्याणी''

विद्या (ज्ञान), विजय, सुखादि कामना-पूर्ति

पाँच वर्ष— ''रोहिणी''

रोग-नाश

छः वर्ष— ''कालिका''

शत्रु-नाश

सात वर्ष— ''चण्डिका''

धन और ऐश्वर्य की प्राप्ति

आठ वर्ष— ''शाम्भवी''

मोह-दुःख-दारिद्रय- नाश, संग्राम में विजय

नौ वर्ष— ''दुर्गा''

शत्रु-नाश, साधना-सिद्धि, पर-लोक में सुख

दस वर्ष— ''सुभद्रा''

सभी कामनाओं की पूर्ति

दस वर्ष से अधिक आयुवाली कन्याओं का पूजन **कुमारी**-रूप में नहीं करना चाहिए। ऊपर लिखे नामों से ही विधि-वत् **कुमारियों का पूजन** करे। **पूजन के मन्त्र** क्रमशः निम्न प्रकार हैं—

मन्त्रों के पूर्व में **'श्रीरस्तु'** अथवा **'श्री'** या किसी अन्य बीज-मन्त्र से युक्त मन्त्र का उच्चारण करे।

कुमारिका

कुमारस्य च तत्त्वानि, या सृजत्यपि लीलया।
कादीनापि च देवांस्तां, कुमारीं पूजयाम्यहम्।।

जो कुमार कार्तिकेय के तत्त्वों को और ब्रह्मा आदि देवताओं को अपनी लीला से रचती हैं, उन **भगवती 'कुमारी'** का मैं पूजन करता हूँ।

त्रि-मूर्ति

सत्वादिभिस्त्रिमूर्तिर्या, तैर्हि नाना-स्वरूपिणी।
त्रि-काल-व्यापिनी शक्तिस्त्रिमूर्तिं पूजयाम्यहम्।।

सत्त्व आदि तीन गुणों के द्वारा जो तीन मूर्तिवाली हैं और उन्हीं (गुणों) के द्वारा जो विविध स्वरूपवाली हैं, तीनों कालों में व्याप्त रहनेवाली शक्ति हैं, उन **भगवती 'त्रि-मूर्ति'** का मैं पूजन करता हूँ।

कल्याणी

कल्याण-कारिणी नित्यं, भक्तानां पूजिताऽनिशम्।
पूजयामि च तां भक्त्या, कल्याणीं सर्व-कामदाम्।।

अहर्निश पूजा किए जाने पर जो अपने भक्तों का नित्य कल्याण करनेवाली हैं, उन सब कामनाओं की देनेवाली **भगवती कल्याणी** का मैं भक्ति-पूर्वक पूजन करता हूँ।

रोहिणी

रोहयन्ती च बीजानि, प्राग्-जन्म-सञ्चितानि वै।
या देवी सर्व-भूतानां, रोहिणीं पूजयाम्यहम्।।

समस्त प्राणियों के पूर्व-जन्मों के सञ्चित कर्म-बीजों को जो उगाती हैं, उन **भगवती 'रोहिणी'** का मैं पूजन करता हूँ।

कालिका

काली कालयते सर्वं, ब्रह्माण्डं स - चराचरम्।
कल्पान्त-समये या तां, कालिकां पूजयाम्यहम्।।

कल्प के अन्तिम समय में चर-अचर के सहित सम्पूर्ण विश्व का जो लय करती हैं, उन **भगवती 'कालिका'** का मैं पूजन करता हूँ।

चण्डिका

चण्डिकां चण्ड-रूपां च, चण्ड-मुण्ड-विनाशिनीम्।
तां चण्ड-पाप-हरणीं, चण्डिकां पूजयाम्यहम्॥

प्रचण्ड रूपवाली और चण्ड-मुण्ड का विनाश करनेवाली और महा-पापों को दूर करनेवाली **भगवती 'चण्डिका'** का मैं पूजन करता हूँ।

शाम्भवी

अकारणात् समुत्पत्तिर्यन्वेदैः परि-कीर्तिता।
यस्यास्तां सुखदां देवीं, शाम्भवीं पूजयाम्यहम्॥

वेदों द्वारा जिनकी उत्पत्ति बिना किसी कारण अर्थात् स्वतः बताई गई है, उन सुख देनेवाली **भगवती 'शाम्भवी'** का मैं पूजन करता हूँ।

दुर्गा

दुर्गात् त्रायति भक्तं या, सदा दुर्गति-नाशिनी।
दुर्ज्ञेया सर्व-देवानां, तां दुर्गां पूजयाम्यहम्॥

दुर्दशा को नष्ट करनेवाली जो अपनें भक्त को विपत्ति से सदा बचाती है और जो समस्त देवताओं के लिए भी कठिनाई से जानने योग्य हैं, उन **भगवती 'दुर्गा'** का मैं पूजन करता हूँ।

सुभद्रा

सुभद्राणि च भक्तानां, कुरुते पूजिता सदा।
अभद्र-नाशिनीं देवीं, सुभद्रां पूजयाम्यहम्॥

पूजा किए जाने पर जो अपने भक्तों का सदा कल्याण करती हैं, अमङ्गल का नाश करनेवाली उन **भगवती 'सुभद्रा'** का मैं पूजन करता हूँ।

उक्त मन्त्रों का उच्चारण कर वस्त्र, आभूषण, पुष्प-मालाओं और सुगन्ध आदि से **कन्याओं का सदा भक्ति-पूर्वक पूजन** करना चाहिए।

'नव-रात्र' के **नवों दिन** पूजन करने में यदि असमर्थ हो, तो केवल **अष्टमी के दिन विशेष रूप से भगवती का पूजन** करे क्योंकि **दक्ष-यज्ञ** को ध्वस्त करनेवाली **भद्र-काली का आविर्भाव करोड़ों योगिनियों के सहित 'अष्टमी' को** ही हुआ था। अतः **अष्टमी को विशेष पूजन** का अत्यधिक महत्त्व है।

अष्टमी के दिन **खीर** तथा **मांस** से **हवन** कर **ब्राह्मण-भोजन** कराना चाहिए तथा **फल-फूल** का उपहार अर्पित कर **श्रीजगदम्बा** को प्रसन्न करना चाहिए।

जो लोग पूरे **'नव-रात्र'** भर **उपवास**-पूर्वक **व्रत** करने में असमर्थ हों, उन्हें केवल **तीन दिन— सप्तमी, अष्टमी** और **नवमी** को— उपवास-सहित **व्रतानुष्ठान** करना चाहिए। इससे उन्हें पूर्ण फल की प्राप्ति होगी। **पूजन, हवन, कुमारी-पूजा** और **ब्राह्मण-भोजन** इन्हीं कर्मों से **'नव-रात्र'** का व्रत सम्पन्न होता है।

माँ का आगमन, उपस्थिति, गमन

'दुर्गा-पूजनोत्सव' के दो प्रधान अङ्ग हैं—एक **'आगमनी'**, अन्य **'विजया'**। **'आगमनी'** में **'कैलाश-धाम'** से माँ का **'हिमालय-गृह'** में आगमन एवं **सप्तमी, अष्टमी** व **नवमी**—इन तीन दिन **पितृ-गृह में माँ की उपस्थिति, दशमी** को **'विजया'** का विसर्जन अथवा **माँ का 'स्वामी-गृह-गमन'**। हम लोग शैशव-काल से ही **माँ का यह आगमन, उपस्थिति, गमन** या **विसर्जन** देखते आए हैं।

नव-पत्रिका-पूजन

❖ 'कुल-भूषण' पण्डित रमादत्त शुक्ल

आश्विन शुक्ला सप्तमी के दिन प्रातः **बिल्व** (बेल) के वृक्ष के पास जाए। वहाँ **आचमन** कर **सङ्कल्प**-पूर्वक पञ्चोपचारों से **बिल्व-वृक्ष की पूजा** कर हाथ जोड़ निम्न **प्रार्थना** करे—

ॐ बिल्व-वृक्ष! महा-भाग! सदा त्वं शङ्कर-प्रियः।
गृहीत्वा तव शाखां च, दुर्गा-पूजां करोम्यहम्।।
ॐ शाखोच्छेदोद्भवं दुःखं, न च कार्यं त्वया प्रभो!
देवैर्गृहीत्वा ते शाखां, पूज्या दुर्गेति विश्रुतिः।।

अर्थात् हे महा-भाग बिल्व-वृक्ष! आप सदा से शङ्कर के प्रिय हैं। आपकी शाखा को लेकर मैं दुर्गा की पूजा करता हूँ। हे प्रभो! शाखा के तोड़ने से होनेवाले कष्ट का दुःख आप न करें क्योंकि देवता भी आपकी शाखा लेकर दुर्गा की पूजा करते हैं, ऐसी ख्याति है।

उक्त प्रार्थना कर खड्ग से एक ऐसी शाखा को, जिसमें दो फल लगे हों, निम्न मन्त्र से काटे— **ॐ छिन्दि छिन्दि फट् फट् स्वाहा।**

इस शाखा में **नव-पत्रिकाओं** को बाँधे। **नव-पत्रिकाएँ** ये हैं— **१ रम्भा** (केला), **२ कच्ची** (अरवी), **३ हरिद्रा** (हल्दी), **४ जयन्ती** (जैती), **५ बिल्व** (बेल), **६ दाडिम** (अनार), **७ अशोक**, **८ मानक** (मानकच्चू), **९ धान**—इनकी पत्तियाँ। **सप्तमी** के पहले ही अर्थात् **षष्ठी** के दिन सायं-काल एक छोटे केले के पौधे में अन्य आठ वस्तुओं की शाखाओं को लपेटकर **बिल्व-वृक्ष** के पास रख देना चाहिए।

'नव-पत्रिका'-युक्त **बिल्व-शाखा** को, सम्भव हो, तो ले जाकर **गङ्गाजी में विधि-पूर्वक स्नान** कराए अथवा **पूजा-गृह के आँगन में ही स्नान** करा कर उसका पूजन करे और साड़ी तथा सिन्दूर आदि से सुशोभित कर **गणेशजी** की मूर्ति के दाहिनी ओर स्थापित करे।

पूजा-गृह में **'नव-पत्रिका'** को ले जाने के पूर्व निम्न मन्त्रों को पढ़े—

ॐ पुत्रायुर्धन-वृद्ध्यर्थं, नेष्यामि चण्डिकाऽऽलयम्।
बिल्व-शाखां समाश्रित्य, लक्ष्मी-राज्यं प्रयच्छ मे।।
ॐ आगच्छ चण्डिके देवि! सर्व-कल्याण-हेतवे।
पूजां गृहाण सु-मुखि! नमस्ते शङ्कर-प्रिये!।।

अब उसे स्नान कराने के पूर्व **'ॐ नव-पत्रिका-वासिन्यै दुर्गायै नमः'** मन्त्र से उसकी पूजा करे। फिर निम्न नौ मन्त्रों से उसे स्नान कराए—

ॐ कदली-तरु-संस्थाऽसि, विष्णोर्वृक्षः-स्थलाश्रये!
नमस्ते नव-पत्रि! त्वं, नमस्ते चण्ड-नायिके!।।
ॐ कच्चि! त्वं स्थावरस्थाऽसि, सदा सिद्धि-प्रदायिनी।
दुर्गा-रूपेण सर्वत्र, स्नानेन विजयं कुरु।।
ॐ हरिद्रे! हर-रूपाऽसि, शङ्करस्य सदा प्रिये!
रुद्र-रूपेण देवि! त्वं, सर्व-शान्तिं प्रयच्छ मे।।
ॐ जयन्ति! जय-रूपाऽसि, जगतां जय-कारिणि!
स्नापयामीह देवि! त्वं, जयं देहि गृहे मम।।
ॐ श्रीफल! श्री-निकेतोऽसि, सदा विजय-वर्धन!
देहि मे हित-कामांश्च, प्रसन्नो भव सर्वदा।।
ॐ दाडिम्यघ-विनाशाय, क्षुन्नाशाय सदा भुवि।
निर्मिता फल-कामाय, प्रसीद त्वं हर-प्रिये!।।

ॐ स्थिरा भव सदा दुर्गे! अशोके शोक-हारिणि!।।
मया त्वं पूजिता दुर्गे! मामशोक सदा कुरु।।
ॐ मानो! मान्येषु वृक्षेषु, माननीयः सुरासुरैः।
स्थापयामि महा - देवि! मानं देहि नमोऽस्तु ते।।
ॐ लक्ष्मीः! त्वं धान्य-रूपाऽसि, प्राणिनां प्राण-दायिनि!
स्थिरात्यन्तं हि नो भूत्वा, गृहे काम-प्रदा भव।।

इसके बाद निम्न मन्त्रों से पञ्चोपचारों से प्रत्येक वृक्ष की अलग-अलग पूजा कर प्रणाम-मन्त्रों से प्रत्येक को नमस्कार करे—

१ ॐ रम्भाऽधिष्ठात्रि ब्रह्माणि! इहागच्छ इहागच्छ, इह तिष्ठ इह तिष्ठ, इह सन्निधेहि इह सन्निधेहि, इह सन्निरुद्धस्व इह सन्निरुद्धस्व, इह सम्मुखी-कृता भव। ॐ रम्भाऽधिष्ठात्र्यै ब्रह्माण्यै नमः गन्धं समर्पयामि इत्यादि।

ॐ दुर्गे देवि! समागच्छ, सान्निध्यमिह कल्पय।
रम्भा-रूपेण सर्वत्र, शान्तिं कुरु नमोऽस्तु ते।।

२ ॐ कच्यधिष्ठात्रि कालिके! इहागच्छ इहागच्छ, इह तिष्ठ इह तिष्ठ, इह सन्निधेहि इह सन्निधेहि, इह सन्निरुद्धस्व इह सन्निरुद्धस्व, इह सम्मुखी-कृता भव। ॐ कच्यधिष्ठात्र्यै कालिकायै नमः गन्धं समर्पयामि इत्यादि।

ॐ महिषासुर-युद्धेषु, कच्ची-भूताऽसि सुव्रते!
मम चानुग्रहार्थाय, आगताऽसि हरि-प्रिये!।।

३ ॐ हरिद्राऽधिष्ठात्रि दुर्गे! इहागच्छ इहागच्छ, इह तिष्ठ इह तिष्ठ, इह सन्निधेहि इह सन्निधेहि, इह सन्निरुद्धस्व इह सन्निरुद्धस्व, इह सम्मुखी-कृता भव। ॐ हरिद्राधिष्ठात्र्यै दुर्गायै नमः गन्धं समर्पयामि इत्यादि।

ॐ हारिद्रे वरदे देवि! उमा-रूपाऽसि सुव्रते!
मम विघ्न-विनाशाय, पूजां गृह्ण प्रसीद मे।।

४ ॐ जयन्त्यधिष्ठात्रि कार्तिकि! इहागच्छ इहागच्छ, इह तिष्ठ इह तिष्ठ, इह सन्निधेहि इह सन्निधेहि, इह सन्निरुद्धस्व इह सन्निरुद्धस्व, इह सम्मुखी-कृता भव। ॐ जयन्त्यधिष्ठात्र्यै कार्तिक्यै गन्धं समर्पयामि इत्यादि।

ॐ निशुम्भ-शुम्भ-मथने! इन्द्रैर्देव-गणै सह।
जयन्ति! पूजिताऽसि, त्वमस्माकं वरदा भव।।

५ ॐ बिल्वाधिष्ठात्रि शिवे! इहागच्छ इहागच्छ, इह तिष्ठ इह तिष्ठ, इह सन्निधेहि इह सन्निधेहि, इह सन्निरुद्धस्व इह सन्निरुद्धस्व, इह सम्मुखी-कृता भव। ॐ बिल्वाधिष्ठात्र्यै शिवायै गन्धं समर्पयामि इत्यादि।

ॐ महादेव - प्रिय-करो, वासुदेव-प्रियः सदा।
उमा-प्रीति-करो वृक्षो, बिल्व-वृक्ष! नमोऽस्तु ते।।

६ ॐ दाडिम्यधिष्ठात्रि रक्त-दन्तिके! इहागच्छ इहागच्छ, इह तिष्ठ इह तिष्ठ, इह सन्निधेहि इह सन्निधेहि, इह सन्निरुद्धस्व इह सन्निरुद्धस्व, इह सम्मुखी-कृता भव। ॐ दाडिम्यधिष्ठात्र्यै रक्त-दन्तिकायै गन्धं समर्पयामि इत्यादि।

ॐ दाडिमि! त्वं पुरा युद्धे, रक्त-बीजस्य सम्मुखे।
उमा - कार्यं कृतं यस्मादस्माकं वरदा भव।।

७ ॐ अशोकाधिष्ठात्रि शोक-रहिते! इहागच्छ इहागच्छ, इह तिष्ठ इह तिष्ठ, इह सन्निधेहि इह सन्निधेहि, इह सन्निरुद्धस्व इह सन्निरुद्धस्व, इह सम्मुखी-कृता भव। ॐ अशोकाधिष्ठात्र्यै शोक-रहितायै गन्धं समर्पयामि इत्यादि।

ॐ हर-प्रीति-करो वृक्षो, ह्यशोकः शोक-नाशनः।
दुर्गा - प्रीति - करः यस्मादस्माकं वरदा भव।।

८ ॐ मानाधिष्ठात्रि चामुण्डे! इहागच्छ इहागच्छ, इह तिष्ठ इह तिष्ठ, इह सन्निधेहि इह सन्निधेहि, इह सन्निरुद्धस्व इह सन्निरुद्धस्व, इह सम्मुखी-कृता भव। ॐ मानाधिष्ठात्र्यै चामुण्डायै गन्धं समर्पयामि नमः इत्यादि।

ॐ यस्य पत्रे वसेद् देवी, मान-वृक्षः शची-प्रियः।
मम चानुग्रहार्थाय, पूजां गृह्ण प्रसीद मे।।

*

शारदीय नव-रात्र में कलश-स्थापन

❖ आचार्य पण्डित राधाकान्त पाठक

चारों नव-रात्रों में **'शारदीय नव-रात्र'** का विशेष महत्त्व है। कहा भी है—

शरत्-काले महा-पूजा, क्रियते या च वार्षिकी।
तस्याह सकलां बाधां, नाशयिष्याम्यसंशयम्॥

ऐसी दशा में **'शारदीय नव-रात्र'** के पूजा-विधान पर विशेष रूप से ध्यान देना आवश्यक है। **भगवान् आशुतोष** कथित अनेक तन्त्र-शास्त्र एवं स्मार्त-शास्त्र इस पूजा के उत्तमोत्तम विधि-विधानों से भरे पड़े हैं। **'कलश-स्थापन'** के सम्बन्ध में भी अनेक मत हैं। **पूजा** और **कलश-स्थापन** के विभिन्न मतों के अवलोकन से सामान्य साधक या जिज्ञासु संशय में पड़ जाता है। उसके सामने **पूजा** प्रायः दुरूह लगने लगती है। यद्यपि **माँ की अर्चना** सर्व-काल में मङ्गल-मय है, वह कभी अनिष्ट नहीं कर सकती, तथापि जन-सामान्य के कल्याण की भावना से कुछ शास्त्रीय प्रमाण यहाँ उल्लेखनीय हैं—

१ भगवती काली की पूजा का आरम्भ **अमा-युक्त प्रतिपदा** में न करें। **(काली-तन्त्र)**

२ **'देवी-पुराण'** एवं **'डामर-तन्त्र'** में लिखा है कि **अमावास्या से युक्त प्रतिपदा** में पूजा आरम्भ न करें। यदि एक पल भी **प्रतिपदा** मिले, तो **द्वितीया में पूजा** आरम्भ करें।

३ **प्रतिपदा से युक्त अमा** अमङ्गल-कारिणी है। अतः **अमा-सहित प्रतिपदा** को त्याग दें। **(मार्कण्डेय-पुराण)**

४ हे राजन्! **अमा से युक्त प्रतिपदा** प्रयत्नतः त्याग दें। **(डामर-तन्त्र)**

५ हे राजन्! **आश्विन शुक्ल पक्ष** की **द्वितीया** आदि तिथियों में जो मेरी पूजा करता है तथा **प्रतिपदा-युक्त द्वितीया** में जो मेरी पूजा आरम्भ करता है, वह निश्चित रूप से सुखी और कल्याण का भागी होता है, इसमें संशय नहीं। **(देवी-पुराण)**

६ जो व्यक्ति **अमावास्या से युक्त प्रतिपदा** में, जो अत्यन्त निन्दित मुहूर्त है, पूजा आरम्भ करता है, वह दुर्भिक्ष-ग्रस्त होता है। **(रुद्र-यामल)**

७ प्रातः-काल में **भगवती का आवाहन, पत्रिका-प्रवेश, पूजा** एवं **विसर्जन** करें। **(देवी-पुराण, निर्णय-सिन्धु)**

८ यदि **शुभ लग्न, नक्षत्र** एवं **योगों** का अभाव हो, तो **सूर्यास्त-काल, चन्द्रोदय-काल-व्यापी गोधूलि** के **अभिजित-काल में पूजा** आरम्भ करे, पर **वैधृति** में कदापि न करें। **(चण्डी-तन्त्र)**

९ **प्रातः** या **सन्ध्या**-काल उतना दोष-प्रद नहीं है, जितना **वैधृति** या **अमा-प्रतिपदा का योग। (चण्डी-रहस्य)**

१० यदि **तिथि की वृद्धि** या **ह्रास** हो जाय, तो उसका कोई प्रभाव **'नव-रात्र'** पर नहीं होता। **तिथि-ह्रास** में **अष्ट-रात्र** ही **'नव-रात्र'** हो जाता है। **(निर्णय-सिन्धु)**

११ **आश्विन शुक्ल पक्ष** की **प्रतिपदा** को यदि **वैधृति योग** हो, **चित्रा** हो, तो उसका **प्रथम चरण** त्याग कर **'नव-रात्र'** आरम्भ किया जा सकता है। **(निर्णय-सिन्धु)**

१२ **वैधृति** एवं **चित्रा** में **'कलश-स्थापन'** से क्रमशः पुत्र एवं धन का नाश होता है, इसलिए पुत्र और धन की कामना करनेवाले साधक **चित्रा-वैधृति** में भूलकर भी **कलश की स्थापना** न करें। **(रुद्र-यामल)**

१३ **सूर्योदय से दस घटी पर्यन्त** की प्रातः-कालीन संज्ञा है। **(विष्णु-धर्मोत्तर-पुराण)**

१४ **रात्रि में 'कलश-स्थापन'** या **'कुम्भाभिषेक'** न करे। **(मत्स्य-पुराण)**

१५ **सायं-काल स्थापना** एवं **अभिषेक** के लिए उतना दोष-पूर्ण नहीं, जितना **वैधृति** या **चित्रा। (भवानी-तन्त्र)**

१६ सुमेधा को उपदेश करती हुई स्वयं भगवती ने कहा है— राजन्! **आश्विन शुक्ल प्रतिपदा** की ऊर्ध्व-गामिनी शुद्ध तिथि में **भगवती चण्डिका की पूजा** प्रारम्भ करे। **(कालिका-पुराण)**

१७ **पूर्वाह्न में देवी-घट स्थापित** करनेवाला **वैश्व-देव** न करे, परन्तु **अपराह्न** में करनेवाले को **वैश्व-देव** करना पड़ता है।

१८ कल्याण की कामना करनेवाला **पूर्व विद्धा प्रतिपदा में कलश** स्थापित न करे। **(स्कन्द-पुराण)**

१९ यदि **प्रतिपदा** को **चित्रा-वैधृति** आदि योग उपस्थित हो जाए, तो उसके अन्त में घर में **कलश** स्थापित करे। **(दुर्गार्चन-कल्पतरु)**

२० यदि **वैधृति** आदि योगों का परिहार करते-करते **प्रतिपदा- द्वितीया** नहीं मिले, तो **आदि-पाद** को छोड़कर **भगवती का स्मरण** कर **मध्याह्न में अभिजित-मुहूर्त में कलश** को स्थापित करे। **(रुद्र-यामल)**

२१ **कलश की स्थापना— 'हस्त' नक्षत्र** में करना चाहिए। **आर्द्रा में भगवती का अवबोधन** कर **'हस्त'** में **कलश** स्थापित करे। **मूल** में **आवाहित** कर **'पूर्वा उत्तरा'** में **पूजनादि** एवं **बलिदान** आदि से भगवती को सन्तुष्ट कर **'श्रवण'** में सादर **विसर्जित** कर आगामी दिन **विजयोत्सव** माने, किन्तु कभी भी प्रमाद-वश **महाऽष्टमी** में **'बलि-दान'** न करे। **(दुर्गार्चन-प्रदीप)**

उक्त शास्त्रीय प्रमाणों से यही सिद्ध होता है कि **'कलश-स्थापन'— प्रतिपदा-द्वितीया** के **योगवाली प्रतिपदा को प्रातः-काल** करे। प्रातः **'हस्त'** नक्षत्र प्राप्त रहे, **'वैधृति'** का अभाव हो, **चन्द्रादि** ग्रह विहित स्थान में हों, तो प्रातः-कालीन **'कलश-स्थापन'** अत्यन्त मङ्गल-कारी होता है। यदि **अमावास्या-प्रतिपदा** के योग में **'हस्त'** हो, **वैधृति** का अभाव हो और **ग्रह-लग्न** आदि उत्तम बनते हों, तो भी **'कलश-स्थापन'** उस दिन न करे, प्रत्युत दूसरे दिन करे। यदि **प्रतिपदा** दिन-रात हो और दूसरे दिन एक पल भी मिलती हो, तो दूसरे ही दिन **'कलश'** स्थापित करे।

यदि **प्रतिपदा** के पूर्वाह्न में **'चित्रा'** या **'वैधृति'** हो, तो उसके बीत जाने पर **'कलश'** स्थापित करे। अपराह्न तक भी **'वैधृति'** और **'चित्रा'** मिले, तो **सन्ध्या में चन्द्रोदय-काल में 'कलश' स्थापित** करे। पश्चात् **रात्रि में 'कलश'** स्थापित न करे। यदि **सन्ध्या में पूजा आरम्भ हो जाय और अन्त होते-होते रात्रि हो जाय, तो उसे रात्रि-दोष नहीं माना जाता।** यदि **प्रतिपदा** में कभी भी **शुभ लग्न** न मिले, तो **मध्याह्न** में ही **'कलश'** स्थापित करे। **वामा-क्रम** से **मध्य-रात्रि में भी कलश स्थापित** कर सकते हैं, ऐसा प्रमाण आगमों में प्राप्त है।

* * *

शारदीय नवरात्र, 'विजय'-संवत् २०५७ विक्रमी

(२८ सितम्बर, २००० से ७ अक्टूबर, २००० तक)

❖ पं० कृपाशङ्कर दुबे शास्त्री, ८५ए वर्रा भाग २, इ. डब्लू. एस., सेक्टर-वाई, कानपुर

☐ **'विजय'**-संवत् २०५७ विक्रमी, **आश्विन शुक्ला प्रतिपदा**, वृहस्पतिवार **२८ सितम्बर, २०००** से **शारदीय नवरात्र का आरम्भ** है। वृहस्पतिवार **२८ सितम्बर, २०००** को **प्रतिपदा तिथि** रात्रि १२ बजकर २ मिनट तक है, इसके बाद **द्वितीया तिथि** आरम्भ है। इस प्रकार वृहस्पतिवार **२८ सितम्बर, २०००** को **'द्वितीया'-युक्त प्रतिपदा** है। **'ब्रह्म'-योग** रात्रि ६.१३ तक है। **'हस्त'-नक्षत्र** प्रातः-काल से रात्रि ११.४१ तक है। अतएव वृहस्पतिवार **२८ सितम्बर, २०००— 'शारदीय नवरात्र-व्रत'** आरम्भ करने, **'कलश'-स्थापना, 'ध्वजा'-रोहण, श्रीदुर्गा सप्तशती-पाठ आरम्भ करने का श्रेष्ठकर दिवस** है।

☐ **शारदीय नवरात्र,** 'विजय'-संवत् २०५७ विक्रमी में **'तिथि' की वृद्धि** है, जो कि **शुभ फल-कारक** है। **'नवमी'-तिथि की वृद्धि** है।

☐ **'अष्टमी'**-तिथि वृहस्पतिवार **५ अक्टूबर, २०००** को प्रातःकाल से रात्रि ५ बजकर ६ मिनट तक है। अतः जो लोग **हवन, कन्या-पूजन— अष्टमी** को करते हैं, उनके लिए वृहस्पतिवार, **५ अक्टूबर, २०००** श्रेयस्कर समय है।

☐ **'नवमी'**-तिथि **वृद्धि-युक्त** है। शुक्रवार **६ अक्टूबर, २०००** को प्रातः-काल से सम्पूर्ण दिवस एवं रात्रि—**'नवमी'**-तिथि है। जो लोग **'नवमी'** को हवन, **कन्या-पूजन** करते हैं, उनके लिए **शुक्रवार, ६ अक्टूबर, २०००** का दिन श्रेयस्कर है।

☐ **'नवरात्र'**-व्रत का **पारण** अथवा **अन्न-ग्रहण** करने के लिए शनिवार, **६ अक्टूबर, २०००** का प्रातःकाल श्रेयष्कर है। प्रातः **७ बजकर १६ मिनट तक 'नवमी'** है। अतः **७ बजकर १६ मिनट के बाद 'पारण'** अथवा **अन्न-ग्रहण** करना चाहिए।

☐ **भगवती की प्रसन्नता** एवं **अनुष्ठान की सफलता** हेतु आलस्य का परित्याग, त्रुटियों हेतु **क्षमा-याचना,** शुद्ध उच्चारण, **भाव-युक्त-पाठ** अति आवश्यक है। साथ ही, **माँ भगवती से पुत्र-वत् सम्बन्ध** स्थापित करना भी आवश्यक है। **'देवी भागवत पुराण'** में लिखा है कि— 'हे माँ! तुम्हारा पुत्र तुम्हारे चरण-कमल के पास पीड़ाओं से पीड़ित होकर बैठा है। अतः अखिल पापों को विनाश करनेवाले हस्त-कमल को मेरे शिर पर रखकर मेरी रक्षा करो, पालन करो।'

☐ यहाँ यह भी उल्लेखनीय है कि जो अदृश्य **महा-शक्ति** पर विश्वास नहीं करते, वे **माता की सेवा** से वञ्चित रह जाते हैं। **'देवी भागवत'** में लिखा है कि— 'वे प्राणी मन्द (मूर्ख) और अभागे हैं तथा वे ही रोगों से ग्रस्त रहते हैं, जिनके हृदय में माता की अर्चना-पूजा आदि के प्रति विश्वास नहीं है।' अतएव हम सभी को **माँ की शरण** में जाना चाहिए और **कल्याण-प्राप्ति** करना चाहिए।

* * *

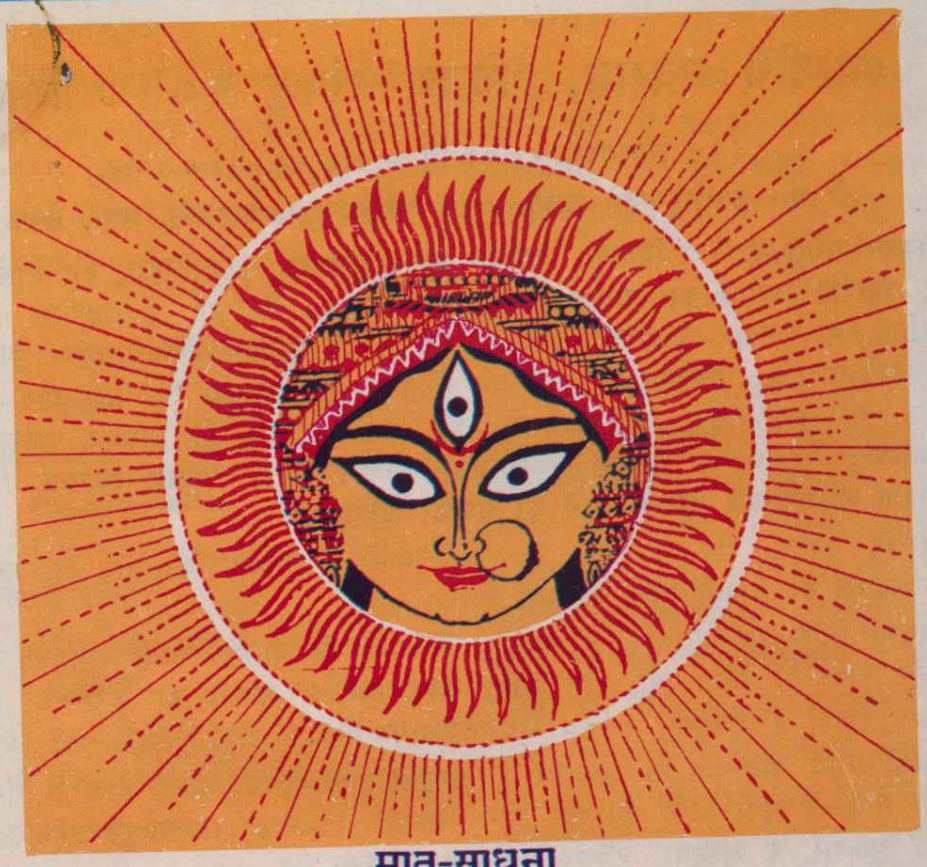

मातृ-साधना

देवी की जैसी **'बाह्य-पूजा'** है, उसी प्रकार **'मानस-पूजा'** भी है। **'हृदयाकाश' में देव्युपासना** उनकी **'मानस पूजा'** है।

'हृदयाकाश' में देवी की अवस्थिति सूक्ष्म भी है और स्थूल भी। स्थूल-रूप में देवी— **लक्ष्मी** और **सरस्वती** हैं, **कार्तिकेय** और **गणेश** हैं। स्थूल-रूप उनकी इच्छा की महिमा है।

उपनिषद् में **पर-ब्रह्म देवी** सर्वत्र विराजिता हैं। **एकाग्र-चित्त** सांसारिक मनुष्य **श्रेष्ठ प्रतिमा-पूजक** है। हृदय में जो **'व्योम-सत्'** है, एकाग्र-चित्त साधक उसकी पूजा **'शारदीया दुर्गा की प्रतिमा'** में करता है।

उसके अनन्तर **'बाह्य-पूजा'** है— इस पूजा में भी साधक **'हृदयाकाश'** को विशाल-रूप से अनुभव करता है।

एकाग्र-चित्त व्यक्ति यदि प्रतिमा में **एकत्व-बोध से चिन्मयी और मृण्मयी देवी की साधना** करे, तो उसके पश्चात् **निरुद्ध अवस्था** आती है। इस अवस्था में उसकी **'मातृ-साधना'** केवल **हृदय** में ही रहती है।

सम्पादक/प्रकाशक/मुद्रक : श्री ऋतशील शर्मा, चण्डी-धाम, प्रयागराज-६ ✆ : ५०२७८३